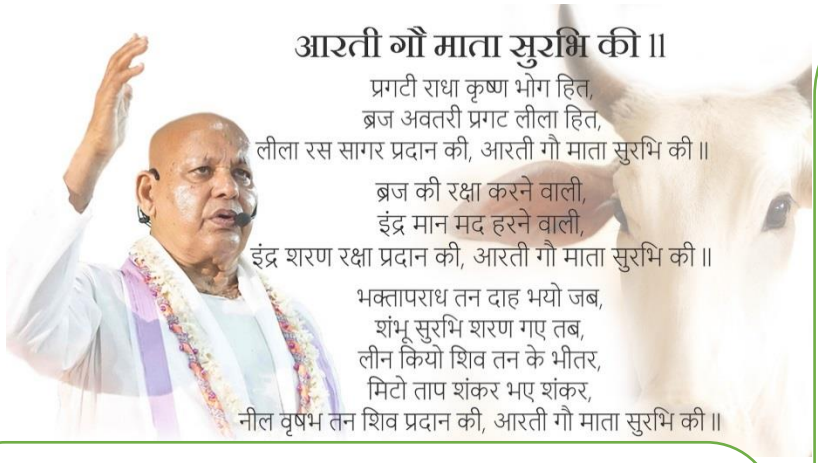

॥ राधे किशोरी दया करो ॥

हमसे दीन न कोई जग में, बान दया की तनक ढरो |
सदा ढरी दीनन पै श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो |
विषम विषयविष ज्वालमाल में, विविध ताप तापनि जु जरो |
दीनन हित अवतरी जगत में, दीनपालिनी हिय विचरो |
दास तुम्हारो आस और की, हरो विमुख गति को झगरो |
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा, यही आस ते द्वार पर्‌यो |

संरक्षक- **श्रीराधामानबिहारीलाल**
प्रकाशक – राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर सेवा संस्थान,
गह्वरवन बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)
(Website :www.maanmandir.org)
(E-mail :ms@maanmandir.org)
mob. : 9927338666, 9837679558

अनुक्रमणिका

विषय-सूची — पृष्ठ-संख्या

१.रंगीली होली पर गौ-सेवा का शंखनाद.....०३
२. श्रीमाताजी गौशाला, बरसाना (संक्षिप्त परिचय)..०४
३. गौ महिमा सम्बन्धी श्लोकों का संग्रह.....०५
४.ब्रज की प्रसिद्ध 'लठामार रंगीली होली' का उपहार....०६
५.'रंगीली होली' पर श्रीबाबामहाराज द्वारा "गौसेवा-सदस्यता" अभियान की घोषणा.....०७
६. विश्वशान्ति महायज्ञ का मान मंदिर से शंखनाद...०९
७. ब्रजरक्षा व गौ रक्षा से होगी देश व विश्व की रक्षा..१०
८. सबसे बड़े गौ उपासक श्रीराधा-माधव.....११
९. श्रीराधारानी की गौ निष्ठा.....१२
१०.गोविन्दलीलामृतानुसार यशोदाजी को श्रीकृष्ण का उपदेश.....१३
११.गौ सेवा से अखण्ड शासन सत्ता की प्राप्ति.....१४
१२.महर्षि च्यवन की गौ भक्ति.....१६
१३.पाण्डवों की गौ भक्ति.....१७
१४. सुरभि गाय की कृपा से शिव जी की रक्षा.....१८
१५. राजर्षि दिलीप की गौ भक्ति.....२१
१६. परम भागवत श्रीनामदेव जी की गौभक्ति.....२३
१७. गो-रक्षा की अनिवार्यता.....२५
१८. गो-संरक्षण के लिए एक अनोखी पहल.....२७
१९. गो-सेवा में निहित समस्त समस्याओं का निदान.....२८
२०. 'गो-सेवा' ही गोविन्द-सेवा..... .....३०
२१.गौ-धन से समृद्धशाली भारत.....३१

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप बाबाश्री के प्रातःकालीन सत्संग का ८:३० से ९:३० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ७:३० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं |

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें | हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ | जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ॥

(श्रीमद्भागवत३/७/४१)

अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंशके बराबर भी नहीं हो सकता |

प्रकाशकीय

सत्पुरुषों के सत्संकल्प में सृष्टि का हित सन्निहित है | यही कारण है परमाराध्य पतितपावन श्रीहरि यथा समय सन्त महापुरुष के रूप में धराधाम पर अवतरित होकर लोक कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं –

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

(श्रीमद्भगवद्गीता४/७)

दैवी एवं आसुरी शक्तियों की संयुक्त रूप से सर्वथा उपस्थिति बनी ही रहती है | अन्ततोगत्वा भगवद् इच्छा से दैवी शक्तियाँ ही प्रतिष्ठित होती हैं | भारतीय सनातन संस्कृति के उत्थान-पतन की बड़ी-बड़ी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं परन्तु जिसका नाम ही सनातन है भला उसका पूर्ण विनाश कैसे संभव है | हजारों वर्षों की पराधीनता के पश्चात् भी भारतवर्ष आध्यात्मिक उत्कर्ष से लब्धकीर्ति है | विभिन्न जातियों के साम्राज्य की त्रासदी भी हजारों वर्षों में हमारी अस्मिता को नहीं मिटा सकी | समय-समय पर अलौकिक शक्तियाँ प्रकट होती रहीं और उनके द्वारा अध्यात्म समृद्ध होता रहा | कलिकाल में यद्यपि युगधर्म का अपना प्रभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर होता ही है फिर भी धर्मध्वजा भी अखण्डरूप से फहराती रहती है | ब्रज के परम विरक्त सन्त पूज्यपाद श्री रमेश बाबा जी महाराज ने भी पृथ्वी पर प्रकट होकर हमारी भारतीय संस्कृति के संरक्षण-संवर्द्धन में अप्रत्याशित कार्य किया है | सामाजिक वैषम्य को मिटाकर सर्वत्र भगवन्नाम की कीर्ति पताका फहराकर प्रभातफेरी के माध्यम से समाज को संगठित करने का कार्य किया तथा इसी तरह सृष्टि की आधारभूता गौमाता की रक्षार्थ माताजी गौशाला के माध्यम से एक बहुत बड़ा उदाहरण प्रस्तुत किया और समाज की गौमाता के प्रति पुरातन आस्था को बनाये रखने के लिए अत्यन्त पुण्यशाली कर्त्तव्य की प्रेरणा दिया कि प्रत्येक प्राणी प्रतिदिन एक रुपये की राशि गौ-सेवार्थ अवश्य प्रदान करें | बात रुपये की नहीं है अपितु गौमाता से जुड़े रहने का यह एक माध्यम है | गौरक्षा में राष्ट्ररक्षा और राष्ट्रमंगल की भावना सन्निहित है | महापुरुषों की ऐसी मंगलमयी भावना का सर्वत्र बोध हो सके, अतः हमारी मासिक पत्रिका “मानमन्दिर बरसाना” में इस भावना का पोषण हुआ है | अपनी-अपनी शक्ति-सामर्थ्यानुसार सभी से अपेक्षा है कि इन भावनाओं का संप्रेषण सर्वथा सभी करने की कृपा करेंगे |

राधाकांत शास्त्री

व्यवस्थापक, मानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

रंगीली होली पर गौ-सेवा का शंखनाद

भारतीय

जनमानस से

एक संत की अपेक्षा

रंगीली होली के पर्व पर ब्रज के विरक्त संत पूज्य श्रीरमेशबाबा ने समस्त भारतीय जनमानस से गोवंश की रक्षा के लिए आगे आने का आह्वान किया; उन्होंने कहा कि प्रति व्यक्ति को एक रुपया आवश्यक रूप से गो-सेवार्थ निकालना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो निश्चय ही हम गोहत्या का पाप वहन कर रहे हैं। सारा देश इस अभियान से जुड जाता है तो अरबों रुपये गोमाता की सेवा में लग सकता है। सच्चे भारतीय बनो और एक रुपये की दैनिक-सेवा अवश्य करो।

श्रीमाताजी गौशाला, बरसाना (संक्षिप्त परिचय)

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी ललिताजी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीराधारानी के ग्राम बरसाना में श्रीमाताजी गौशाला उसी स्थान पर है, जहाँ वृषभानु जी (श्री राधारानी के पिता) की गायें बँधती थीं। ये भारतवर्ष ही नहीं अपितु विश्व की एकमात्र ऐसी गौशाला है जहाँ एक साथ एक ही स्थान पर ५५ हजार से अधिक देशी नश्ल का गौवंश मातृवत् पालित व पोषण हो रहा है | यद्यपि पूज्य सद्गुरुदेव श्री बाबा महाराज का कथन तो है कि वस्तुतः गाय का पोषण हम नहीं कर रहे वरन् हम स्वयं गाय द्वारा पोषित हो रहे हैं। बात सही है, गौमाता के उपकारों को देखा जाय तो सच में वे अनन्त हैं। गौमाता व गौमूत्र का महत्त्व जान लिया जाय तो केवल गाय ही नहीं बछड़े-बैल जो उपेक्षित हैं, सम्पूर्ण गौवंश इस उपेक्षा से बच जायेगा । आज 'श्री मानमंदिर' की माताजी गौशाला में लूली-लंगड़ी, असहाय गौवंश का न केवल पालन-पोषण प्रत्युत अखण्ड हरिनाम संकीर्तन द्वारा पूजन भी हो रहा है। गौ माता के आशीर्वाद से माताजी गौशाला को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बहुत से कार्य हो रहे हैं | गौमूत्र से निर्मित बहुत से आयुर्वेदिक उत्पाद तैयार किये जा रहे हैं | गौशाला में गाय के गोमूत्र एवं गोवर से बनी जैविक खाद का ब्रजवासी कृषि में उपयोग कर रहे हैं | जिससे उनकी फसल उत्पादन बड गया है | साथ ही हानिकारक रसायनों का प्रयोग न करने से फसल कि गुणवत्ता बड़ी है और रसायनों में होने बाला आर्थिक अव्यय रुक गया है | जिससे ब्रजबासी काफी प्रशन्न हैं | खाद की माँग दिन पर दिन बढती जा रही है | एसिया के सबसे बड़े गोवर गैस से गौशाला में मिनी जनरेटर चलाये जा रहे हैं, बिजली बनाई जा रही है जिसका गौशाला में ही उपयोग हो रहा है | इसके अलावा गौशाला में अन्य कई शोधकार्य चल रहे हैं | आशा है की भविष्य में माताजी गौशाला पूर्णरूपेण आत्मनिर्भर होने के साथ साथ देश में एक आदर्श गौशाला का कीर्तिमान स्थापित करेगी और शीघ्र ही गायों की संख्या भी बढ़कर एक लाख से अधिक हो जायेगी | यहाँ गायों को खरीदा नहीं जाता है, रक्षार्थ व सेवार्थ गायों को लोग स्वतः ले आते हैं, किसी गाय को लौटाया नहीं गया है, इनमें से अधिकतर वे गायें हैं जो कसाइयों द्वारा कटने से बचाई गईं हैं, अतः गायों का आशीर्वाद भी गौशाला को प्राप्त हो रहा है | इन गौओं के आशीर्वाद से ही यह गौशाला सतत् संवृद्धि को प्राप्त हो रही है |

गौ-सेवा एक बहुत बड़ा यज्ञ है, इसे भक्तिभावपूर्वक करने से सहज ही श्री बढ़ती है, भक्ति बढ़ती है | इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है 'श्रीमानमन्दिर की माताजी गौशाला' |

पूज्य श्रीबाबामहाराज स्वयं अपनी घटना बताते हैं (पूज्यबाबाश्री के शब्दों में) - "सन् २०१० में ब्रज ८४ कोस की यात्रा में हमारी (यात्रा के मध्य में) अचानक तबियत खराब हो गयी, हृदय का एक वाल्व फट गया था, जिससे सम्पूर्ण देह में रक्त फ़ैल गया | डॉक्टरों ने कहा कि अब इनका बचना मुश्किल है, लेकिन हमको कुछ नहीं हुआ, इसका कारण है कि यहाँ इतनी गायों का सेवाभाव से पालन-पोषण हो रहा है |" अतः ये बात बिल्कुल सत्य है कि गौ-सेवा से आयु व यश का वर्द्धन होता है |

पूज्य श्रीबाबामहाराज कहते हैं कि जीव में कोई सामर्थ्य नहीं है | ये सभी ब्रजसेवा-कार्य (श्रीराधारानी ब्रजयात्रा, श्रीमाताजी गौशाला, ब्रज के वन, पर्वत, कुण्डों का जीर्णोद्धार आदि बड़े-बड़े कार्य) केवल भगवान् की आराधना से हो रहे हैं | पूज्य श्रीबाबा महाराज ब्रजभूमि में लगभग ६५ वर्षों से सुदृढ़निष्ठापूर्वक नित्य भगवद्-आराधन कर रहे हैं | उसी आराधना के प्रभाव से माताजी गौशाला में ५५ हजार से अधिक गायों का मातृवत् पालन-पोषण हो रहा है और कभी किसी से कुछ भी माँगा नहीं जाता है, केवल एकमात्र भगवान् के आश्रय (निष्काम हरिनाम-संकीर्तन) से यह चल रही है |

यत्र यत्र हरेरर्चा सः देशः श्रेयसां पदम् |

यहाँ मान मंदिर पर धर्म को कभी व्यापार नहीं बनाया गया इसीलिये बिना धनबल और बिना जनबल के ही इतना बड़ा गौवंश पालित-पोषित हो रहा है, ब्रज के अनेकों कुंडों-वनों का यहाँ से संरक्षण हो रहा है, विश्व की सबसे बड़ी निःशुल्क ब्रजयात्रा चल रही है |

गौ-महिमा सम्बन्धी श्लोकों का संग्रह

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी मीराजी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीकृष्ण यशोदा मैया से –

गोपालनं स्वधर्म्मो नस्तास्तु निश्छत्र-पादुकाः ।
यथा गावस्तथा गोपास्तर्हि धर्म्मः सुनिर्म्मलः ॥
धर्मात् आयुर्यशो वृद्धिर्धर्म्मो रक्षति रक्षितः ।
स कथं त्यज्यते मातर्भीषु धर्म्मोऽस्ति रक्षिता ॥

(गोविन्दलीलामृत, पंचम सर्ग – २८,२९)

'मैया ! गोपालन हमारा जातिधर्म है | गौएँ जिस प्रकार छाता और पादुकाएँ धारण नहीं करती हैं, उसी प्रकार हम गोपों को भी इन वस्तुओं का परित्याग करना उचित है | ऐसा ही करने पर तो हमारा धर्म निर्मल होगा | धर्म से ही आयु और यश की वृद्धि होती है; जो मनुष्य धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है | इसलिए हे माता | भय से रक्षा पाने का केवल धर्म ही एक उपाय है | अतः हम सब लोग धर्म का त्याग क्यों करें |'

श्रीकृष्ण नन्दबाबा से –

तीर्थस्थानेषु यत्पुण्यं यत्पुण्यं विप्रभोजने ।
सर्वव्रतोपवासेषु सर्वेष्वेव तपःसु च ॥
यत्पुण्यं च महादाने यत्पुण्यं हरिसेवने ।
भुवः पर्यटने यत्तु सत्यवाक्येषु यद्भवेत् ॥
यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु दीक्षायां च लभेन्नरः ।
तत्पुण्यं लभते प्राज्ञो गोभ्यो दत्त्वा तृणानि च ॥

'बाबा ! तीर्थ में जाकर स्नान दान से, ब्राह्मणों को भोजन कराने से, संपूर्ण व्रतोपवास, तपस्या, महादान और हरि की अराधना करने पर जो पुण्य सुलभ होता है अथवा संपूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा, संपूर्ण वेद वाक्यों के स्वाध्याय और समस्त यज्ञों की दीक्षा ग्रहण करने पर मनुष्य जिस पुण्य को पाता है, वही पुण्य केवल गाय को ग्रास देने से प्राप्त हो जाता है ।'

सर्वे देवा गवामङ्गे तीर्थानि तत्पदेषु च।
तद्गुह्येषु स्वयं लक्ष्मीस्तिष्ठत्येव सदा पितः॥
गोष्पदाक्तमृदा यो हि तिलंक कुरुते नरः ।
तीर्थस्नातो भवेत् सद्यो जयस्तस्य पदे पदे ॥
गावस्तिष्ठन्ति यत्रैव तत्तीर्थं परिकीर्तितम् ।
प्राणांस्त्यक्त्वा नरस्तत्र सद्यो मुक्तो भवेद् ध्रुवम् ॥

(ब्रह्मवैवर्त.कृ.ज.खं २१/८९-९४) बाबा ! सब देवता गौमाता के अंग में हैं, सम्पूर्ण तीर्थ गायों के पैरों में तथा स्वयं लक्ष्मी उनके गुह्य स्थानों (मल-मूत्र के स्थानों) में सदा वास करती हैं। जो मनुष्य गाय के पद-चिह्न से युक्त मिट्टी द्वारा तिलक करता है, उसे तत्काल तीर्थ स्थान का फल मिलता है और पग-पग पर उसकी विजय होती है। गायें जहाँ भी रहती हैं, उस स्थान को तीर्थ कहा गया है। वहाँ प्राणों का त्याग करके मनुष्य तत्काल मुक्त हो जाता है, इसमें संशय नहीं है।'

गवां कण्डुयनं कुर्यात् गोग्रासं गौ प्रदक्षिणम् ।
गोषु नित्यं प्रसन्नासु गोपालोऽपि प्रसीदति ॥ (गौतमीय तन्त्र)

'गायों को खुजलाने से, गौ-ग्रास देने से (गायों को हरा चारा, अन्न आदि खिलाने से), गायों की प्रदक्षिणा करने से गौमाता प्रसन्न होती हैं और उससे गोपालजी भी प्रसन्न हो जाते हैं |'

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः ।
अलुब्धैर्दान शीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥ (स्कन्ध पुराण ४/२/१०)

'गोवंश, विप्र, वेद, सती, सत्यवादी, निर्लोभ और दानशील – इन सातों के द्वारा पृथिवी धारण की जाती है । ये सात पृथ्वी के आधार स्तम्भ हैं |'

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम् ।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति ॥ (महा.अनु. ५१/३२)

'गौओं का समुदाय जहाँ बैठकर निर्भयतापूर्वक साँस लेता है, वह उस स्थान की शोभा बढ़ा देता है और वहाँ के सारे पापों को खींच लेता है ।'

तासां प्रचारभूमिं तु कृत्वा प्राप्नोति मानवः।
अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयम् ॥ (विष्णुधर्मोत्तर)

'गौओं के चरनेके लिये जो गोचर भूमि की व्यवस्था करता है, वह मनुष्य निःसन्देह अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करता है ।'

गावः श्रेष्ठा पवित्राश्च पावना जगदुत्तमाः ।
ऋते दधि घृताभ्यां च नेह यज्ञः प्रवर्तते ॥
गावो लक्ष्मयाः सदा मूले गोषु पाम्पा न विद्यते ।
मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुख प्रदाः ॥

'अर्थात् गौएँ सर्वश्रेष्ठ, पवित्र, पूजनीय और संसार में उत्तम हैं । इनके दूध, दही, घी और गव्य के बिना संसार में यज्ञ सम्पन्न नहीं होते। 'गौ' में सदैव लक्ष्मी निवास करती है। गौ जहाँ रहती है वहाँ पाप निवास नहीं करते, ये प्राणिमात्र को सुख सम्पदा से विभूषित करती रहती है। गाय सम्पूर्ण प्राणियों की माता है ।'

पृष्ठे ब्रह्मा गले विष्णु मुखेरुद्रः प्रतिष्ठितः ।
मध्ये देवगणाः सर्वे रोमकूपे महर्षयः ॥
पुच्छे नागाः खुराग्रेषु ये चाष्टौ कुल पर्वताः ।
मूत्रे गङ्गादयो नद्यो नेत्रयोः शशिभास्करौ ।
येन यस्या स्तनौ वेदा सा धेनु वरदास्तु मे ॥

ब्रज की प्रसिद्ध 'लठामार रंगीली होली' का उपहार

संकलन/लेखन- अंतर्राष्ट्रीय व्यासाचार्य डॉ.रामजीलाल जी शास्त्री बी.एस.सी.,एम.ए.द्वय (हिंदी,संस्कृत)
बी.एड.आचार्य (साहित्य), पी.एच.डी., अध्यक्ष- मान मन्दिर सेवा संस्थान, बरसाना

अनन्त श्री विभूषित पूज्य श्रीरमेशबाबाजी महाराज, जिन्हें महामहिम राष्ट्रपति ने **'पद्मश्री'** से सम्मानित करने की गणतंत्र दिवस के अवसर पर घोषणा की थी | उन्ही महाराज श्री ने सतत् गौओं के निर्ममतापूर्वक वध को देखकर द्रवीभूत चित्त से 'रंगीली होली' के पावन अवसर पर (१५ मार्च २०१९ को) गौमाता की रक्षा के लिए हजारों भक्त श्रोताओं के मध्य सद्विचार रूपी अमूल्य उपहार भेंट किया, जिसे पाकर सभी श्रोता उल्लास से भर गये | जब कभी किसी को किसी अवसर पर कोई उपहार दिया जाता है तो वह व्यक्ति चाहता है कि यह उपहार हमेशा बना रहे और मेरे बाल-बच्चे भी इस उपहार को देखें और सुरक्षित रखें और उपहार पाकर सभी भक्तजन अपने को धन्य मानते रहें | आपके मन में यह विचार अवश्य आ रहा होगा कि पूज्य बाबा महाराज जी ने आखिर ऐसा क्या उपहार दिया, जिसे पाकर सभी निहाल हो गये...!!

वह अलौकिक व अनुपम उपहार है – ब्रज-संस्कृति की परमाधारिका 'गौ-सेवा', जिसे करने से सहजता में ही अति दुर्लभतम भक्ति (ब्रज-प्रेम) की सम्प्राप्ति हो जाती है | सभी भक्तजनों को गौ-भक्ति करने का सुअवसर मिले, इस उद्देश्य से श्रीबाबामहाराज ने 'गौसेवा-सदस्यता का अभियान' (गौ-ग्रास योजना) का शुभारम्भ किया है, जिसमें कोई कहीं भी 'गौ-सेवा का सदस्य' बनकर योजना का लाभ ले सकता है | केवल माताजी गौशाला ही नहीं भारत की कोई भी गौशाला हो, हम अपनी सेवा से गौवंश के रक्षक बन सकते हैं, नहीं तो गौवंश की हत्या के पाप से हम बच नहीं पायेंगे | इसका पूज्य बाबाश्री ने एक सुगम उपाय बताया कि हर परिवार का प्रत्येक सदस्य एक रुपया रोज निकाले, इस तरह महीने में ३० रुपये और एक साल में ३६० रुपये हो जायेंगे | इस धनराशि को आप माताजी गौशाला में भेज सकते हैं | व्यक्तिगत रूप से न आ सके तो 'ऑन लाइन' से भी भेज सकते हैं, यहाँ हिसाब में पूर्ण पारदर्शिता है | कोई भी व्यक्ति कभी भी इंटरनेट से 'ऑन लाइन' देख सकता है |

बैंक खाता नम्बर निम्नलिखित है, –A/C NO. 915010000 494364 IFSC- UTIB0001058 Axis Bank Kosi kalan

रंगीली होली के दिन (१५ मार्च २०१९ को) पूज्य श्रीमहाराजजी के इस विचार का हजारों लोगो ने अनुमोदन किया और बोले हम सब लोग १०-१० सदस्य अवश्य बनायेंगे | एक रुपया प्रतिदिन के हिसाब से कोई अधिक आर्थिक-भार भी नहीं पड़ेगा | गरीब आदमी भी इस यज्ञ में अपनी आहुति दे सकता है | यह बड़ा ही सात्विक यज्ञ होगा | जैसे - साधु-संत मधुकरी का पवित्र सात्विक अन्न खाते हैं, विचार भी सात्विक बनते हैं, सुख-शान्ति रहती है |

यह एक रुपये वाला यज्ञ भी पूर्ण सात्विक है | इससे अहं उत्पन्न नहीं होगा | धनाढ्य लोगों का धन मदयुक्त हो सकता है परन्तु गरीबों का यह धन सात्विकता प्रदान करने वाला होगा |

जितने अधिक सदस्य बनेंगे उतना ही अधिक गौमाता का संरक्षण व भरण-पोषण होगा, गौमाता का आशीष मिलेगा, सभी लोक-परलोक में आगे बढ़ेंगे, सर्वांगीण विकास को प्राप्त होंगे |

'**श्रद्धा बिना धर्म नहि होई |**' श्रद्धा होना बहुत आवश्यक है और वह श्रद्धा क्या है?

सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई | जौं हरि कृपाँ हृदयँ बस आई ||
(श्रीरामचरितमानस, उत्तरकाण्ड -११७)

'रंगीली होली' पर श्रीबाबामहाराज द्वारा "गौसेवा-सदस्यता" अभियान की घोषणा

श्रीबाबामहाराज द्वारा कथित सत्संग (१५/३/२०१९) से संग्रहीत

संत श्रीभामिनीशरणजीमहाराज, मानमंदिर, गह्वरवन

बाबाश्री के शब्दों में – गौ-सेवा के लिए हमने एक योजना बनायी है, वह सबके काम में आने वाली है | आज प्रायः देश में गौ-सेवा दिखाई नहीं देती है, इसलिए जहाँ गायें नहीं हैं, वहाँ धर्म नहीं है तो देशहित भी नहीं है | च्यवन ऋषि ने कहा था –

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम् ।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति ॥

जिस देश में गायें निर्भय विचरती हैं, उस देश के समस्त पाप को वह खा जाती हैं और वह देश सम्पन्न व सुखी हो जाता है | महाभारत में गाय की महिमा के इस श्लोक को हमने पढ़ा तो उसके बाद 'माताजी गौशाला' का निर्माण व उद्घाटन हुआ और अब यहाँ विशालरूप में गौवंश (लगभग ६० हजार गायों का) मातृवत् पालन-पोषण हो रहा है; लेकिन आज हमारे देश में बहुत बुरी हालत है, इतनी बुरी हालत है कि जो भारत एक समय 'सोने की चिड़िया' कहलाता था, आज उसे 'पत्थर की चिड़िया' भी नहीं कहा जा सकता | सारे देश का कल्याण तो हम नहीं कर सकते किन्तु मेरे मन में एक बात आयी है - परसों जब मैं संध्या को संकीर्तन के बाद गाड़ी द्वारा माताजी गौशाला होते हुए मानमन्दिर आ रहा था तो गौशाला के बाहर मैंने एक बोर्ड देखा, उस पर लिखा था – "कृपया करके अब यहाँ गायों को मत लायें क्योंकि यहाँ गायों के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है, इस बात को पढ़कर मुझे बहुत धक्का लगा; धक्का इसलिए लगा क्योंकि माताजी गौशाला सम्पूर्ण भारत में विशाल गौवंश की सेवा के लिए प्रख्यात थी, कितनी भी गायें आ जायें, कभी भी किसी भी गाय को यहाँ से लौटाया नहीं गया | मात्र ४ गायों से इस गौशाला का शुभारम्भ हुआ था और आज यहाँ लगभग ५५ हजार गायें हैं | मैंने विचार किया कि इस गौशाला में तो राधारानी काम चला रही हैं किन्तु देश में अन्यत्र जहाँ भी गौशालायें हैं, वहाँ काम नहीं चल रहा है, उन गौशालाओं में गायों की सेवा के लिए क्या सोचा जाये, अवश्य ही विचार करना चाहिए, नहीं तो देश में आज बड़े पैमाने पर गौहत्या हो रही है, वह सबके सिर पर आयेगी | इसलिए मैंने एक योजना शुरू की है – "गौसेवा-सदस्यता" गाय की सेवा हेतु सदस्यता | इसके लिए प्रत्येक भारतीय को गौ-ग्रास के लिए १ रुपया अवश्य निकालना चाहिए, इस तरह एक महीने में तीस रुपये होंगे और साल भर के गौ-ग्रास हेतु ३६५ रुपये होंगे | अगर श्रीजी यह योजना सफल कर दें देश की समस्त गोशालाएँ सहज में चल सकती हैं, हमें अपने यहाँ की गौशाला की चिन्ता नहीं है | माताजी गौशाला के लिए तो हम लोगों ने न कभी चंदा किया और न ही किसी से धन की याचना करते हैं | इसलिए हमारे पास एक पैसा मत लाओ | माताजी गौशाला के लिए आज तक कहीं से चंदा नहीं माँगा गया | इस गौशाला का २५ लाख रुपये प्रतिदिन का खर्च है | गौसेवा की सदस्यता हेतु प्रतिदिन का एक रुपया हम अपने लिए अथवा माताजी गौशाला के लिए नहीं माँग रहे हैं | हम चाहते हैं कि सारे देश में गायों की सेवा हेतु यह योजना लागू हो जाये, इससे देश की समस्त गायों की रक्षा हो जायेगी | इस गौसेवा सदस्यता को सबसे पहले हमने अपने यहाँ से शुरू किया | मैंने मानमन्दिर के प्रबन्धक राधाकान्तजी से कहा कि गौसेवा सदस्यता हेतु पर्चे और फ़ार्म छपवाओ तथा गौ-सेवा हेतु १ रुपये के सदस्य बनाना आरम्भ करो और सारे भारत में सदस्य बनाओ | गौसेवा सदस्यता अभियान को सबसे पहले हमने मानमन्दिर से चालू किया है इसके लिए हमने विचार किया कि सर्वप्रथम इसका सदस्य मैं बनूँगा | इसके बाद मैं मानमन्दिर सेवा संस्थान के अध्यक्ष और यहाँ के प्रसिद्ध कथाव्यास पण्डित रामजी लाल शास्त्री जी से कहा कि आप लोग बहुत अधिक सेवा करते हैं | साल में कभी भी इनके गृह श्री राधारस मन्दिर से कोई भी अतिथि भूखा नही लौटता, श्रीराधारसमन्दिर के सभी सदस्य अतिथि वैष्णवों की सेवा करते हैं परन्तु पण्डित श्रीरामजी लाल शास्त्री जी ने कहा कि हमारे परिवार का प्रत्येक व्यक्ति गौसेवा अभियान का सदस्य बनेगा | सभी को चाहिए कि गो-सेवा के महत्त्व को जानो और इस 'गोसेवा सदस्यता अभियान' को पूरे भारत में फैला दो | बरसाने की रंगीली होली के दिन यह कार्यक्रम मानमन्दिर, बरसाना से प्रारम्भ हुआ है और आप लोग देख लेना कि यह अभियान

अवश्य ही सफल होगा | रंगीली होली के दिन मैं यह घोषणा कर रहा हूँ | हर भारतीय को गोसेवा हेतु १ रूपया प्रतिदिन अवश्य देना चाहिए और इस अभियान को मैंने सबसे पहले अपने मानमन्दिर से शुरू किया, सभी ने देखा कि मानमन्दिर की साध्वियों ने १०००० रुपये इकट्ठा करके गो सेवा हेतु सबके सामने दान में दिया और इसी प्रकार सारे जीवन भर ये देवियाँ देंगी | हमारे मानमन्दिर के सभी सदस्य गोसेवा हेतु सदस्य बन रहे हैं | सबसे पहले यह कार्यक्रम हमारे स्थान से ही आरम्भ होगा | भारतवासी हिन्दू गौभक्त हैं इसलिए प्रत्येक परिवार से गौ सेवा हेतु एक सदस्य बनाओ | इसका नाम है – "गौ सेवा सदस्यता अभियान |" एक परिवार में कम से कम १ व्यक्ति गौसेवा के लिए सदस्य बनो और बनाओ, ज्यादा सदस्य नहीं बना सकते हो तो केवल इतना ही करो | रंगीली होली के दिन श्री राधारानी के धाम बरसाने से इस शुभ योजना का प्रारम्भ हुआ है | मंगलकारी अभियान में सहयोग करें | यदि प्रत्येक भारतीय प्रतिदिन गौसेवा के लिए १ रुपये का अर्पण करे तो सारे देश से गौमाता की समस्या हल हो जायेगी | न तो हमे गोसेवा-गोरक्षा के लिए सरकार से कुछ कहना पड़ेगा न किसी से कुछ माँगना पड़ेगा न किसी के आगे हाथ फैलाना पड़ेगा | यह गौसेवा सदस्यता अभियान हमने क्यों शुरू किया ? जब श्यामसुन्दर ने गिरिराज पर्वत को धारण किया तब उन्होंने ब्रजवासियों से कहा – थोड़ो-थोड़ो देओ सहारो, गिरिवर भारो है "हे ब्रजवासियों ! गिरिराज जी को उठाने में तुम लोग भी सहारा लगाओ |" ऐसा गोविन्द ने क्यों कहा, इसलिए कहा जिससे कि सभी में सेवाभाव आ जाये, सहयोग का भाव आ जाये और परस्पर प्रेम हो जाये और इसलिए ब्रज-ब्रज बना | ब्रज में चारों ओर प्रेम बढ़ा और आज भी ऐसा हो सकता है यदि हमारे देश में सभी के द्वारा गौसेवा होना शुरू हो जाये तो भारत-भारत बन जायेगा | इसके लिए भारतवर्ष के प्रत्येक घर में, प्रत्येक परिवार से एक सदस्य को गौसेवा हेतु सदस्य बनाना चाहिए | 'श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान' द्वारा "गौग्रास योजना" का आरम्भ हुआ है, इसका उद्देश्य यही है कि गोग्रास के लिए प्रतिदिन १ रुपया निकाला जाये | 'रंगीली होली' के अवसर पर आज मानमन्दिर में प्रत्येक गाँव के ब्रजवासी आये | इससे पता पड़ता है कि ब्रजवासी ही चाहते हैं कि पूरे भारतवर्ष में 'गोग्रास कार्यक्रम' में लोग सहयोग करें और ऐसा लगता है कि ब्रज के भी कई गाँवों में गोग्रास हेतु ब्रजवासी सहयोग करेंगे | इस गोग्रास योजना में जितने भी लोग सम्मिलित हो जायें, उतना ही बढ़िया है | सम्मलित कैसे होंगे ? जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि प्रतिदिन १ रुपया के हिसाब से महीने में ३० रुपये और वर्षभर के लिए ३६५ रुपये | इस तरह से सम्पूर्ण भारतवर्ष में यह 'गोग्रास योजना' फैल जानी चाहिए, फिर हमें न तो गोरक्षा-गोसेवा के लिए सरकारी साहयता की आवश्यकता पड़ेगी और न किसी आन्दोलन को करने की जरूरत पड़ेगी और ऐसा लगता है कि आज जो यह योजना शुरू हुई है, यह अवश्य ही सफल होगी | हर घर का कम से कम प्रत्येक व्यक्ति 'गोग्रास योजना' में अवश्य शामिल हो, उसे चाहिए कि इकट्ठा ही एक महीने की किश्त ३० रुपये 'माताजी गौशाला' में दे दे क्योंकि प्रतिदिन १ रुपया देने यहाँ कौन आ सकेगा अथवा साल भर के लिए ३६५ रुपये भी दिये जा सकते हैं | इस तरह से यदि भारतवर्ष का प्रत्येक व्यक्ति गोग्रास के लिए ३० रुपये महीना अथवा ३६५ रुपये देने लग जाये तो भारत की सौ करोड़ की आबादी के हिसाब से सौ करोड़ रुपये गोग्रास हेतु इकट्ठे हो जायेंगे और इस तरह भारतवर्ष में सभी गौशालायें आसानी से गौ-सेवा कर सकेंगी और तब सरकार से धन माँगने की जरूरत नहीं पड़ेगी और सहज में ही देश का कल्याण हो जाएगा | इसलिए सभी लोग अपने-अपने गाँव और शहरों में जरूर इस बात का प्रयत्न करना कि हर घर से एक व्यक्ति इस 'गोग्रास योजना' का सदस्य बने | जिसको भी पैसा देना हो, वह मानमन्दिर की माताजी गौशाला में गौसेवा हेतु दान दे देवे | साल भर के लिए एक बार में ही ३६५ रुपये जमा कर दो, रोज-रोज तो यहाँ कैसे दौड़ोगे अथवा आपके गाँव और शहर में जो भी गौशाला हो, जहाँ आपको लगता हो कि वहाँ इमानदारी के साथ गौ-सेवा होती है तो अपना पैसा वहाँ दे आओ | सभी गायें ठाकुरजी की हैं, चाहे वे माताजी गौशाला की हों अथवा किसी भी गाँव या नगर की गौशाला में, जो भी गायें हैं, वे सभी गोपालजी की हैं | आप लोगों से ऐसा नहीं कहा जा रहा है कि आप मानमन्दिर की माताजी गौशाला में ही पैसा दो | गाय तो सभी जगह हैं, जहाँ भी आप लोगों का भाव हो, जहाँ आपको लगे कि अमुक गौशाला में अच्छी गौसेवा होती है वहाँ पर आप गौसेवा हेतु पैसा दे सकते हैं | इस प्रकार से ब्रज-देश व अखिल विश्व की सच्ची सेवा होगी क्योंकि **'गावो विश्वस्य मातरः |'** गाय सारे संसार की माता है | गौसेवा करने से सारा संसार पवित्र हो जायेगा | जो भारत में रहने वाला है, भारत देश के नागरिक हैं, ऐसा एक परिवार का एक आदमी तो अवश्य होगा ही जो इस प्रकार की सेवा करके अपने परिवार का कल्याण करेगा |

विश्वशान्ति महायज्ञ का मानमंदिर से शंखनाद

संकलन एवं लेखन –संत श्री बरसानाशरण जी महाराज, मानमन्दिर, बरसाना

जिस प्रकार महाभारत युद्ध के प्रारम्भ में भगवान् ने शंखनाद किया था, **'पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः ।'** वैसे ही रंगीली होली के दिन मान मंदिर से एक अभियान का शंखनाद 'पूज्य श्रीरमेश बाबा जी महाराज' के द्वारा हुआ, जिसका नाम है **'गौ सेवा सदस्यता अभियान'** |

गावश्च बहुलास्तत्र न कृशा न च दुर्बलाः |
पयांसि दधिसर्पींषि रसवन्ति हितानि च || (महाभारत)

हर भारतवासी को देवभूमि का निवासी बनाना है इसीलिए व्यक्ति, समाज व राष्ट्र सभी के हित के लिए इस अभियान की मानमंदिर से शुरुआत हुई | अतः सभी लोग इसे समझें, इससे जुड़ें और दूसरों को भी इससे जुड़ने के लिए प्रेरित करें; इस अभियान के तहत **'प्रतिदिन प्रति व्यक्ति एक रुपया गौ-ग्रास के निमित्त निकालना है और उसे निकटस्थ पालित गोवंश की सेवा में लगाना है |'**

इस अभियान से जुड़कर हर भारतवासी को विश्व के सबसे बड़े विश्वशान्तिमहायज्ञ में सम्मिलित होना का एवं छोटी सी आहुति देने का लाभ घर बैठे मिलेगा, शास्त्रों में लिखा है –

यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु दीक्षायां च लभेन्नरः ।
तत्पुण्यं लभते प्राज्ञो गोभ्यो दत्त्वा तृणानि च ॥

'समस्त यज्ञों की दीक्षा ग्रहण करने पर मनुष्य जिस पुण्य को पाता है वही पुण्य केवल गाय को ग्रास देने से प्राप्त हो जाता है ।' इसलिए गौ-ग्रास निकालने से यज्ञ का पुण्य मिलता है |

नाहं तथाद्मि यजमानहविर्वितानेश्च्योतद्घृतप्लुतमदन् हुतभुङ्मुखेन ।
यद्ब्राह्मणस्य मुखतश्चरतोऽनुघासं
तुष्टस्य मय्यवहितैर्निजकर्मपाकैः ॥ (भा. ३/१६/८)

हिन्दू सनातन संस्कृति में भी हर द्विजाति को प्रतिदिन पञ्चयज्ञ करने का विधान है, पञ्चयज्ञ हैं –

(१) ब्रह्मयज्ञ (२) देवयज्ञ (३) पितृयज्ञ (४) अतिथियज्ञ (५) बलिवैश्वदेवयज्ञ |

इसमें बलिवैश्वदेव नामक यज्ञ में प्रतिदिन गौ-ग्रास देने का विधान है, अगर गौ-ग्रास निकाले बिना कोई भोजन ग्रहण करता है तो वह अपने पापों को ही खाया है, ऐसा भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता जी में भी कहा है –

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥ (३/१३)

अर्थात् जो 'यज्ञावशिष्ट' यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाते हैं यानी यज्ञ करके फिर भोजन करते हैं, वे श्रेष्ठ पुरुष हैं और वे सब प्रकार के पापों से मुक्त हो जाते हैं और जो यज्ञ किये बिना ही खाते हैं, वे निश्चित पापी हैं और वे पापी लोग अपना तो अपने पाप को ही खाते हैं |

पृथ्वी के आधारभूत सप्त स्तम्भों में प्रथम स्तम्भ है गाय; स्कन्द पुराण में यह श्लोक दो जगह लिखा है –

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः ।
अलुब्धैर्दान शीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥ (स्क. ४/२/१०)

इसलिए विश्वशान्ति महायज्ञ का प्रथम चरण है गौमाता | भगवान् श्रीकृष्ण ने भी इसीकारण विश्वशान्ति के लिये ब्रजवासियों से 'गौ-यज्ञ' करवाया, भागवत जी में लिखा है –

स्वलङ्कृता भुक्तवन्तः स्वनुलिप्ताः सुवाससः ।
प्रदक्षिणं च कुरुत गोविप्रानलपर्वतान् ॥ (१०/२४/२९)
अयाजयद्गोसवेन गोपराजं द्विजोत्तमैः ।
वित्तस्य चोरुभारस्य चिकीर्षन् सद्व्ययं विभुः ॥ (३/२/३२)

जिस समय नन्द बाबा का धन बहुत अधिक बढ़ गया, उस धन के सद्व्यय की दृष्टि से श्रीकृष्ण ने गोवर्धन-पूजा रूप "गो यज्ञ" कराया। धन यदि बढ़े तो सत्कार्य में लगाने में ही उसकी सार्थकता है, अन्यथा मृत्यु के बाद धनार्जन में हुआ पाप ही मनुष्य के साथ जाता है |

महाभारत का महायुद्ध समाप्त होने के बाद देश में शांति और सद्भाव के लिये ही पाण्डवों से भी भगवान् ने ३ अश्वमेध यज्ञ करवाए थे | **अयाजयद् धर्मसुतं अश्वमेधैस्त्रिभिर्विभुः ।** (भागवत ३/३/१८)कलियुग की शक्ति क्षीण होगी, कलियुग नष्ट हो जायेगा | युग धर्म में परिवर्तन आ जायेगा क्योंकि कलियुग की शुरुवात गौ अत्याचार से हुई थी | परीक्षित जी ने जब दिग्विजय किया था, तब उन्होंने देखा था कि वृषभ और गाय पर कलियुग अत्याचार कर रहा है | अगर इन दोनों की रक्षा हो जाये तो कलियुग आज भी क्षीण हो जायेगा |

ब्रजरक्षा व गौरक्षा से होगी देश व विश्व की रक्षा

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी गोविंदी जी, मानमन्दिर, बरसाना

ब्रज क्या है ? ब्रज है गायों का खिरक, गौ खिरक को ही ब्रज कहा गया है। ब्रज का एक नाम 'गोष्ठ' गोकुल भी है, वेदों में लिखा है –

"यत्र गावो भूरिश्रृंगाः अयासः" (ऋग्वेद.१/१५)

जहाँ गाय हैं वही ब्रज है। इस ब्रज यानि गोकुल ने ही कन्हैया को गोपाल बनाया, गोविन्द बनाया। 'गोपाल' शब्द की व्युत्पत्ति है – **'गाः पालयति इति गोपालः'** जो गायों का पालन करता है, वह है गोपाल और 'गोविन्द' शब्द की व्युत्पत्ति होती है – **'गाः विन्दति इति गोविन्दः'** जो गायों की रक्षा करता है, वह है गोविन्द | महामुनि शाण्डिल्य ने भी बज्रनाभ जी को ब्रज का स्वरूप बताते हुए आज्ञा दी थी कि

नद्यद्रिद्रोणिकुण्डादिकुञ्जान् संसेवतस्तव।
राज्ये प्रजाः सुसम्पन्नास्त्वं च प्रीतो भविष्यसि॥

(स्कन्द पुराण, भा. मा. १/३९)

'हे बज्रनाभ ! ब्रज की नदी, पर्वत, घाटी, सरोवर, कुण्ड एवं वन-कुञ्जों की सेवा एवं इनका संरक्षण करो। ऐसा करने से तुम्हारे राज्य में प्रजा बहुत ही सम्पन्न होगी।'

ब्रजसेवा से सारा देश सम्पन्न हो जाएगा | ब्रजसेवा से तात्पर्य नदी, अद्रि (पर्वत) द्रोणी (पर्वत के भीतर जो गुफायें हैं), कुञ्जें, वन, कुण्ड आदि – ये सब ब्रज है | बड़े-बड़े मकान या बड़े-बड़े मंदिर ब्रज नहीं है | ब्रज का सही स्वरूप जो महामुनि शाण्डिल्य जी ने बताया वही है | ब्रज के जो पर्वत थे उनकी चोटियों पर श्रीकृष्ण गौचारण करते थे, श्रीमद्भागवत में युगलगीत में लिखा है

सहबलः स्रगवतंसविलासः
सानुषु क्षितिभृतो व्रजदेव्यः। (भागवत १०/३५/१२)

इस श्लोक में **'सानुषु'** शब्द आया है, इससे पता चलता है कि ये ब्रज के सभी पर्वत गोचरभूमि उस समय थे, अगर आज भी ये पर्वत सुरक्षित हो जाएँ और गोचरभूमि के लिये उपयोग में आयें तो आज कई लाख गायों का संरक्षण केवल ब्रज में ही हो सकता है | महाभारत अनुशासन पर्व में भी लिखा है –

अटवीपर्वताश्चैव नदीतीर्थानि यानि च |
सर्वाण्यस्वामिकान्याहुर्न हि तत्र परिग्रहः॥

वन, पर्वत, नदी और जलाशय – इन पर किसी का स्वत्व नहीं होता है | अगर कोई इन्हें अपना ही स्वत्व मानकर इन पर अधिकार करता है तो वह पापी है क्योंकि इन पर गौ माता का अधिकार है, ये गोचरभूमियाँ हैं, जहाँ गायों को चरने की स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए | जो मनुष्य इन गोचरभूमियों पर अधिकार करता है, वह महापाप करता है | पद्मपुराण में लिखा है कि जनक जी जैसे महाभागवत को भी चरती हुई गाय को रोकने के कारण नरक के द्वार का दर्शन करना पड़ा था |

एकदा तु चरन्तीं गां वारयामास वै भवान्|
तेन पाप विपाकेन नरकद्वार दर्शनम्॥

इसलिए ब्रज के पर्वतों-वनों आदि का अगर ठीक से संरक्षण हो और उन्हें गौ माता के लिये उपयोग किया जाए तो गौ माता के संरक्षण में जो कठिनाई आ रही है वह दूर हो जायेगी और जब गौ रक्षा होगी तो उससे देश संपन्न हो जाएगा |

महाभारत में लिखा है –

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम्।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति॥ (महा.अनु. ५१/३२)

'जिस देश में गायें निर्भय श्वास छोड़ती हैं अर्थात् उन्हें किसी प्रकार का भय नहीं होता है, वह देश सुशोभित होता है और गौ माता उस देश के सारे पाप का अपकर्षण कर लेती हैं।'

गायों के संरक्षण के लिये गौचरभूमि की बड़ी आवश्कता है, क्योंकि गाय को चलते रहना जरूरी होता है |

गो शब्द कैसे बना ?

गच्छतीति गो – अर्थात् जो गतिशील है, वह है गो | गम् धातु में डोः प्रत्यय करने से गो शब्द निष्पन्न हुआ है | इसका तात्पर्य यह है कि जो एक जगह नहीं रहती है, सदा चलती रहती है, आज इस वन में कल उस वन में, आज इस पर्वत पर कल उस पर्वत पर, उसको गाय कहते हैं |

गाय के घूमने के लिये गोचर भूमि की बहुत आवश्यकता है | इसलिए सरकार तथा सार्वजनिक संस्थाओं को चाहिये कि वे वर्तमान या भावी गोशालाओं के उपयोग के लिये निःशुल्क गोचर भूमि प्रदान करें। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में लिखा है –

तासां प्रचारभूमिं तु कृत्वा प्राप्नोति मानवः।
अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयम्॥

'गायों के चरने के लिये गोचर भूमि की व्यवस्था करके मनुष्य निःसन्देह अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त. करता है। यदि वन, पर्वत, नदी और तीर्थ गायों के लिये खुले रखे जायँ तो करोड़ों गायों का पालन-पोषण हो सकता है और उससे भूमि की शस्योत्पादन-शक्ति भी कई गुना बढ़ सकती है

सबसे बड़े गौ-उपासक श्रीराधा-माधव

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी कृष्णा जी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीकृष्ण की गौ निष्ठा –

राधामाधव की अन्तरंग लीलाओं में एक लीला है दानलीला; बरसाने में दान लीला दो जगह होती है साँकरी खोर और दानगढ़ | दानगढ़ 'रतिदान (प्रेमदान) व छद्म दान' लीला की स्थली हैं। दान लीला में श्रीराधारानी एवं गोपियाँ श्रीकृष्ण से कहती हैं कि प्यारे तुम मार्ग में हमें रोककर हमसे दान लेते हो? हम छकहारिनों को छेड़ते हो, कभी हमारे वस्त्राभूषण व चूनरी चुरा लेते हो, क्या ये सब पापकृत्य नहीं हैं ? तुम इतना पाप करते हो किन्तु हमने तुमको कभी किसी तीर्थ में स्नान करते नहीं देखा, कभी भजन करते नहीं देखा |"

प्यारे ! कैसे छूटोगे पाप से, काऊ तीरथ हू नहिं न्हात हो

"अरे कन्हैया ! इन पापों के बोझ से तुम कैसे छूटोगे? हमने तुमको कभी न भजन करते देखा, न तीर्थ स्नान करते, तुम्हारा ये चोरी छिनारी आदि का पाप कैसे जायेगा?"

गोपियों की बात सुनकर श्यामसुन्दर बोले "अरे ! मेरे जैसा धर्मात्मा संसार में कोई दूसरा होगा ही नहीं। मैं जैसा धर्म, भजन, तीर्थ स्नान करता हूँ, वैसा संसार में कोई नहीं कर सकता।

प्यारी गौरज गंगा नहात हौं और जपत गऊन के नाम हौं

हे गोपियो ! गौ रज गंगा से बड़ा कोई तीर्थ है क्या?" मैं गौ रज से स्नान करता हूँ, बस उसी से मुझे सब तीर्थों में स्नान करने का फल मिल जाता है क्योंकि पुराणों में लिखा है – सभी देवता गाय के अंग में हैं, सभी तीर्थ गाय के खुर में हैं और लक्ष्मी गोबर में हैं। गौ रज से जो तिलक कर लेता है, उसका सब तीर्थों का स्नान हो जाता है।'

इसलिए **'प्यारी ! गऊ रज गंगा न्हात हौं....|'** प्रातःकाल उठकर सर्वप्रथम मैं गौ-रज गंगा में स्नान करता हूँ और **'जपत गऊअन को नाम |'** गायों के नाम का जप करता हूँ| (गौचारणकाल में जब गायें वन में घास चरने के लिए बहुत दूर-दूर तक चली जाती हैं तो श्रीकृष्ण उन्हें अपने पास बुलाने के लिए उनका नाम लेकर पुकारते हैं – अरी धौरी ! ओ कारी !! अरे धूमर !!!.....) जिस प्रकार संतजन अपने इष्टदेव का नाम-जप करते हैं, उसी प्रकार मैं गौओं के नाम का प्रतिदिन जप करता हूँ, यह बहुत बड़ा भजन है | इसीलिये **'परम पुनीत सदा रहौं ..'** पाप तो मेरा कभी स्पर्श भी नहीं कर सकता | मैं तो सदा-सर्वदा पवित्र बना रहता हूँ |

जो गौभक्त है, उसके पास पाप कभी आ ही नहीं सकता, वह परमपावन व मंगलमय है | गौ-सेवक हर समय गायों का दर्शन करता रहता है, गौमाता इतनी पवित्र हैं कि सभी पापों को समूलतः नष्ट कर देती हैं |" गोपालजी के गौभक्तिमय वचन सुनकर श्रीराधारानी सहित ब्रजगोपिकाएँ निरुत्तर हो गईं |

ब्रह्मवैवर्तपुराणानुसार नन्दबाबाको श्रीकृष्णका उपदेश -

श्रीनन्दबाबा और समस्त ब्रजवासी पहले दीपावली के अवसर पर इन्द्र की पूजा करते थे लेकिन श्रीकृष्ण ने इन्द्र पूजा बंद करवाकर नन्दबाबा एवं समस्त ब्रजवासियों से गोयज्ञ करवाया और वहाँ नन्दबाबा से स्वयं श्रीकृष्ण ने कहा है कि इन्द्र आदि देवों की पूजा करने की जरूरत नहीं है क्योंकि गायों की पूजा करो, गिरिराज जी की पूजा करो

तस्माद् गवां ब्राह्मणानामद्रेश्चारभ्यतां मखः।
य इन्द्रयागसम्भारास्तैरयं साध्यतां मखः॥

(भा.१०/२४/२५)

गाय, ब्राह्मण, गिरिराज इन तीनों का पूजन करें।" ! हमारे ये गिरिराज जी तो भक्तों में भी आर्य भक्त हैं।" यही सम्मति, यही कथन, गोपियों का भी है – (१०/२१/१८) गोधन का वर्धन ही इनके गोवर्धन नाम होने का मुख्यभूत हेतु है। दिनभर हमारी गायें इन पर चरती हैं।

सर्वे देवा गवामङ्गे तीर्थानि तत्पदेषु च।
तद्गुह्येषु स्वयं लक्ष्मीस्तिष्ठत्येव सदा पितः॥
गोष्पदाक्तमृदा यो हि तिलंक कुरुते नरः।
तीर्थस्नातो भवेत् सद्यो जयस्तस्य पदे पदे॥
गावस्तिष्ठन्ति यत्रैव तत्तीर्थं परिकीर्तितम्।
प्राणांस्त्यक्त्वा नरस्तत्र सद्यो मुक्तो भवेद् ध्रुवम्॥

(ब्रह्मवैवर्त २१/९०-९४)

(श्री कृष्ण, बाबा नन्द से) "बाबा ! गौ अंग में सब देवों का निवास, गौ खुर में सब तीर्थों का निवास ; गौगुह्यअंग (गोबर) में स्वयं श्री लक्ष्मी जी का नित्य निवास है। तभी गौरज का तिलक कर लेने पर तत्काल सब तीर्थों के स्नान

का फल प्राप्त होता है और गौरज धारी पग-पग पर विजयी होता है। गौ खिरक में प्राण त्याग से निःसंशय मुक्ति हो जाती है।

जो अनार्य पुरुष गौ, ब्राह्मण के शरीर पर आघात करता है, निश्चित ही उसे ब्रह्महत्या सदृश पाप लगता है।"

नन्द – "किन्तु बेटा ! इन्द्र पूजन से, हमारी आगामी आपदाओं का नाश हो जाता है। इन्द्रयाग तो पारम्परिक पूजन है, हम अहीरों का।"

कृष्ण – "बाबा ! इन्द्र कौन वस्तु है? अरे ! श्री हरि के एक निमेष में १०८ ब्रह्मा बदल जाते हैं, उनके समक्ष इन्द्र सर्वथा सत्ताहीन है। अतः गोपजाति के लिए गिरि-पूजन ही सर्वोत्कृष्ट है।"

श्री कृष्ण के इस ओजस्वी, प्रभावशाली भाषण को सुनकर सब ब्रजवासियों के मन-मष्तिक में अद्भुत गौ-विप्र-गिरि पूजन की आस्था जगी और उन्होंने गौ-यज्ञ किया –

अयाजयद्गोसवेन गोपराजं द्विजोत्तमैः |
वित्तस्य चोरुभारस्य चिकीर्षन् सद् व्ययं विभुः || (भागवत)

भगवान् ने गौ-महोत्सव (गिरिराज-यज्ञ) इसीलिये करवाया कि गिरिराजजी की तलहटी में गायें आवें, जिससे गायों को खूब चारा (हरी-भरी घास चरने को) मिले, **"गाः वर्द्धयति इति गोवर्द्धनं"** जो गायों की वृद्धि करता है उसका नाम 'गोवर्द्धन' है | अतः कृष्ण ने नंदबाबा से कहा कि बाबा ! गायों का ही यज्ञ करो, किसी देवता का मत करो | ब्रज में गायों की सेवा से धन बहुत बढ़ गया था, **'वित्तस्य चोरुभारस्य'** ब्रज में इतना धन बढ़ गया कि कृष्ण को चिन्ता हो गई कि इसे जल्दी कैसे खर्च कराया जाए ? नंदबाबा के बढ़े हुए वित्त (धन) का सद्व्यय (सदुपयोग) कराने के लिए श्रीकृष्ण ने गोवर्द्धन-पूजन (गौ-यज्ञ) करवाया |

धन एक बोझ है, धन बढ़ गया तो निश्चय पाप बढ़ गया, उस धन को नहीं संभालोगे तो पाप ले बैठेगा | 'चिकीर्षन् सद् व्ययं विभुः' उसका इलाज है कि धन बढ़ गया तो धर्म में लगा दो | धर्म में लगाने से पैसा बढ़ता जाएगा और सुरक्षा भी बढ़ती जाएगी |

लक्ष्मी के सुत चार हैं धर्म, अग्नि, नृप, चोर |
धर्म हेतु खर्चे नहीं तो तीन करें भड़फोर ||

.....

श्रीराधारानी की गौ-निष्ठा

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी कृष्णप्रिया जी, मानमन्दिर, बरसाना

राधारानी का तो प्राकट्य ही गौसेवी वंश में हुआ है | राधारानी सूर्यवंशी थीं | जिस वंश में राजा दिलीप जैसे गौसेवी भक्त हुए हैं | राजा दिलीप के लड़कों में से जो सबसे छोटे थे इनका नाम धर्म था, उन्होंने पिताजी जा अनुकरण किया और बोले कि हमें राज्य नहीं चाहिए। हम तो केवल गाय की सेवा करेंगे। धर्म के बाद इसी वंश में आगे चलकर अभयकर्ण जी हुए। राम जी की आज्ञा से शत्रुघ्न जी जब ब्रज में आये तो अभयकर्ण भी इनके साथ आये, क्योंकि रामजी ने उनको यह आज्ञा देकर के भेजा था कि ब्रजमण्डल गौसेवा के लिए उपयुक्त स्थान है, वहाँ जाकर तुम गौसेवा करो और आगे तुम्हारे वंश में श्रीराधारानी का प्राकट्य होगा | अतः अभयकर्ण जी शत्रुघ्न जी के साथ ब्रज में आये और यहाँ रहकर गौसेवा करने लगे | इन्हीं के वंश में रशंग जी हुए, जिन्होंने बरसाना नगर बसाया है और इन्हीं रशंग जी के वंश में ही राजा वृषभानु और राधा रानी हुई हैं। इसलिए राधारानी ये सूर्यवंशी थीं और गौसेवी कुल में आयी हैं।

श्रीराधारानी और गोपियाँ इतनी बड़ी गौभक्ता थीं कि जिस समय श्रीकृष्ण ने वृष रूपधारी अरिष्टासुर का वध किया था तो उन्होंने श्रीकृष्ण से कहा कि अब तुम हमारा स्पर्श नहीं करना– **ततस्तु राधिकात्यक्तो ललितामोहनस्तदा।**
अस्माकं नैव संसर्गो विमोचनं वृषहत्यासमन्वितः ॥

"हे कृष्ण ! हे वृषवधक ! अब तुम हमें न छूना, तुमने एक वृष की हत्या की है। गौवंश पर आघात किया है।" श्रीकृष्ण ने कहा कि वह तो असुर था | राधारानी बोलीं – "भले ही वह असुर था परन्तु उसका स्वरूप तो बैल का था, वह गौवंश में

आता है, इसलिए तुमको गौ-हत्या लग गयी |" अब तुम हमारा स्पर्श भी मत करो | यद्यपि श्रीकृष्ण ने बहुत समझाया कि मैंने तो सारे ब्रज की रक्षा की, यदि मैं उसे नहीं मारता तो वह सारे ब्रज का विनाश कर देता लेकिन राधारानी ने उनकी बात नहीं मानी क्योंकि उनमें सच्ची गौ निष्ठा थी | श्रीकृष्ण ने सोचा कि ये बहुत ऊँची गौभक्ता हैं, इनकी निष्ठा का हमें सम्मान करना चाहिए, इसलिए वह बोले – "हे प्यारी जू ! मैं कौन-सा धर्माचरण करूँ, जिससे तुम्हारी दृष्टि में इस गौहत्या के पाप से मुक्त हो जाऊँ | राधारानी बोलीं – "तुम तीर्थों में जाकर स्नान करो, तभी तुम्हारा गौ-हत्या का पाप नष्ट होगा |" श्रीश्यामसुन्दर बोले कि यदि मैं तीर्थों में जाकर स्नान कर भी आऊँगा, तब भी तुमलोग मुझ पर विश्वास नहीं करोगी और कहोगी कि नन्द का लाला झूठ बोला रहा है, बिना स्नान किए ही बाहर घूमकर लौट आया | अतः मैं पृथ्वी के समस्त तीर्थों को यहीं ब्रज में बुलाता हूँ | उसी समय श्री ठाकुर जी ने भूमि पर अपनी पार्ष्णि (एड़ी) से प्रहार किया और समस्त तीर्थों को आहूत किया कि हे समस्त तीर्थो ! कृपया आप यहाँ पधारिये ! तब सभी तीर्थ मूर्तिमान वहाँ उपस्थित हो गये। श्री कृष्ण बोले (गोपियों से) – "देखो ! अब तुम सब तीर्थों के दर्शन कर लो, कहीं फिर मुझे झूठा बना दो कि तुमने कहाँ और कब तीर्थ बुलाये, उनमें स्नान किये।" किन्तु गोपियाँ तो गोपियाँ हैं, बोलीं –"हमें तो कोई तीर्थ नहीं दिखाई दे रहा है।" ठाकुर जी सोचने लगे कि ये कितनी चतुर हैं। सामने तीर्थ साक्षात् खड़े हैं और कहती हैं कि हमें तो कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है तो वे सब तीर्थ स्थल करबद्ध होकर अपना अपना परिचय देने लगे।

प्रोचु:कृताञ्जलिपुटा लवणाब्धिरस्मि क्षीराब्धिरस्मि श्रृणुतामरदीर्घिकास्मि। शोणोऽपि सिन्धुरहमस्मि भवामि ताम्रपर्णी च पुष्करमहञ्च सरस्वती च गोदावरी रविसुता सरयू: प्रयागोरेवास्मि पश्यत जलं कुरुत प्रतीतिम्।

(विश्वनाथ चक्रवर्ती पाद कृत टीका भा.१०/३६/१५)

"मैं लवणसागर हूँ, मैं क्षीरसागर हूँ, मैं सोन नदी हूँ, मैं ताम्रपर्णी नदी हूँ, मैं पुष्कर तीर्थ हूँ, मैं सरस्वती नदी हूँ, मैं गोदावरी हूँ, मैं यमुना हूँ, मैं अयोध्या से सरयू हूँ, मैं प्रयाग की संगम स्थली हूँ, मैं रेवा नदी हूँ।

जरा हमारे निर्मल जल की ओर देखो और हमारे ऊपर विश्वास करो।"

तब गोपियों ने कहा – "ठीक है अब हमें तीर्थ दीख गये हैं, तुम इनमें स्नान करो।" तब उन सभी तीर्थों के एकत्रित जल में श्री कृष्ण ने स्नान किया और बोले – "देखो अब तो मैं पवित्र हो गया हूँ"

स्नान करने के उपरान्त गोविन्द ने श्री राधारानी से पूछा – "अब तो तुम हमारा स्पर्श करोगी, मुझे अपनाओगी ?" वह बोलीं – " हे प्यारे ! अब तुम शुद्ध हो गए हो |" तो ऐसी श्रीराधारानी की गौ निष्ठा थी |

.....

गोविन्दलीलामृतानुसार यशोदाजी को श्रीकृष्ण का उपदेश

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी गोपिका जी, मानमन्दिर, बरसाना

गोविन्दलीलामृत में श्रीकृष्ण ने यशोदा जी से कहा है कि मैया गौ-सेवा के प्रताप से चारों ओर सुख-समृद्धि, धन-संपत्ति आयु, यश और धर्म की वृद्धि होती है | गो पालन करने के कारण कभी भी आपत्ति नहीं आ सकती | गौ-पालन, गौ-रक्षा एक ऐसा धर्म है जिससे आयु और यश की वृद्धि होती है, मनुष्य की अकाल मृत्यु भी टल जाती है |

ये श्रीकृष्ण ने मैया यशोदा से उस समय कहा था जब यशोदा मैया ने बालकृष्णलाल से बहुत आग्रह किया कि लाला ! तू छतरी लगाकर और पादुका पहनकर जायेगा तो मैं गौचारण करने की आज्ञा दूँगी | तब श्रीकृष्ण बोले कि हे मैया ! गौ-चारण के समय हम छतरी नहीं लगायेंगे और न ही पैरों में पादुका पहनेंगे क्योंकि –

गोपालनं स्वधर्म्मो नस्तास्तु निश्छत्र-पादुकाः।
यथा गावस्तथा गोपास्तर्हि धर्म्मः सुनिर्म्मलः॥

निर्मल धर्म यही है कि जैसे गाय हमारी इष्ट है तो जिस प्रकार गाय रहती है, उसी प्रकार गोपालक ग्वारिया (गोपाल) को भी रहना चाहिए, जब गाय के पास छतरी नहीं है तो ग्वारिया के

पास भी न हो, ये है सच्चा गौपालन-धर्म | सुनिर्मल धर्म वही है, जिसमें कष्ट सहा जाए |" यशोदा मैया बोलीं – "बेटा ! तू हमें धर्म की शिक्षा दे रहा है, धर्म से क्या होगा ?" गोपालजी बोले – "मैया !

धर्मादायुर्यशो वृद्धिर्धर्म्मो रक्षति रक्षितः ।
स कथं त्यज्यते मातर्भीषु धर्म्मोऽस्ति रक्षिता ॥
(५/२८,२९)

धर्म की रक्षा करने से हमारी आयु की वृद्धि होगी, कंस और उसका कोई भी असुर हमें मार नहीं सकता क्योंकि हम गोपालक हैं | देखो तो सही, कंस का कोई भी असुर मुझे और किसी भी ग्वारिया को हानि नहीं पहुँचा सका | मुझे तो क्या, गौचारण के समय किसी अन्य छोटे से गोपशिशु को भी कंस के भेजे हुए भयंकर दैत्य अघासुर, बकासुर आदि कोई हानि नहीं पहुँचा सके | धर्म से मनुष्य की आयु का वर्द्धन होता है, धर्म से यश बढ़ता है, ऐसे धर्म का त्याग मैं कैसे कर सकता हूँ ? जो कायर लोग होते हैं वे धर्म का पालन नहीं करते हैं | क्या तू मुझको भीरु बनाएगी | माँ ! तू भूल रही है, भय के स्थानों में यही धर्म हमारी रक्षा करता है | जो 'धर्म' समझकर गौ-पालन करता है तो यही धर्म उसकी रक्षा करता है |" ब्रजवासियों की गौभक्ति के कारण ही कंस के द्वारा भेजे हुए असुर अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुए | तुम धर्म की रक्षा करोगे तो धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा | यदि तुम धर्म की रक्षा करते हो तो 'मृत्युकाल, व्याधि व विपत्तियों में 'धर्म' ही तुम्हारी रक्षा करेगा |

श्रीकृष्ण ने जो गौसेवा की उससे न केवल भारत की प्रत्युत सम्पूर्ण विश्व की रक्षा हुई थी। गोपियाँ कहती हैं –

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते
वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम् । (भा.१०/३१/१८)

कृष्ण ! तुम्हारे आने से विश्व मंगल हुआ। कैसे? तुमने 'गौ सेवा' की |

.....

गौ-सेवा से अखण्ड शासन सत्ता की प्राप्ति

संकलनकर्त्री एवं लेखिका बाल व्यासाचार्या गौरी जी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीमद्भागवत में प्रसंग आया है जब गुरु बृहस्पति जी के अपमान से इंद्र कमजोर हो गए थे, उस समय राजा बलि के सान्निध्य में असुरों ने अमरावती पर चढ़ाई कर दी, देवता उनसे पराजित होकर के ब्रह्मा जी के पास पहुँचे, तब ब्रह्मा जी ने कहा – देवताओ ! गाय-गुरु -गोविन्द की सेवा से ये असुर इतने बड़े हैं –

त्रिपिष्टपं किं गणयन्त्यभेद्य-मंत्रा भृगूणामनुशिक्षितार्थाः ।
न विप्रगोविन्दगवीश्वराणां भवन्त्यभद्राणि नरेश्वराणाम् ॥
(भा. ६/७/२४)

ये असुर इस समय इन्द्रलोक तो छोड़ो हमारा हमारा ब्रह्मलोक तक जीत सकते हैं क्योंकि जो मनुष्य ब्राह्मण, गोविन्द, और गाय के प्रति ईश्वर बुद्धि रखता है, उनकी उपासना करता है, तो उसका कभी अमंगल नहीं हो सकता, वह सदैव बढ़ता ही जाएगा | जैसे ये असुर बढ़ रहे हैं | ये जो ब्रह्मा जी ने उस समय देवताओं से कहा था ये बिलकुल सत्य है, इसी कलियुग में इसका प्रभाव दिखाई पड़ा | चित्तौड़ को वसाने वाले प्रतापी राजा बप्पा रावल हुए हैं, ये गौ सेवा के प्रताप से ही इतने बड़े थे कि इन्होंने ईरान, ईराक आदि जाने कितने देशों को जीत लिया था | इसलिए इनके बारे में राजस्थानी लोकगीतों में कहा जाता है कि –

सर्वप्रथम बप्पा रावल ने केसरिया फहराया ।
और तुम्हारे पावन रज को अपने शीश लगाया ॥
फिर तो वे ईरान और अफगान सभी थे जिते ।
ऐसे थे झपटे यवनो पर हों मेवाड़ी चीते ॥

बप्पा बहुत ही शक्तिशाली शासक थे। मेवाड़ के अन्तर्गत एक रियासत थी ईडर, ये वहाँ के राजा नागादित्य के पुत्र थे किन्तु इनका लालन-पालन ब्राह्मण परिवार के सान्निध्य में हुआ था। बचपन में गायों को चराते थे, उनमें से एक बहुत अधिक दूध देती थी। शाम को गाय जंगल से वापस लौटती थी तो उसके थनों में दूध नहीं रहता था

। बप्पा दूध से जुड़े हुए रहस्य को जानने के लिए जंगल में उसके पीछे चल दिए। गाय निर्जन कंदरा में पहुंची और उसने हारीत ऋषि के यहां शिवलिंग अभिषेक के लिए दुग्धधार करने लगी। इसके बाद बप्पा हारीत ऋषि की सेवा में जुट गए। उनके आशीर्वाद से एवं गौसेवा के प्रभाव से बप्पा मेवाड़ के राजा बने और मेवाड़ी राजवंश के सबसे प्रतापी शासक कहे गए। वीरता में इनकी बराबरी भारत का कोई और योद्धा कर ही नहीं सकता। इसलिए गायों के प्रति जिनका भाव है उसका कभी अमंगल नहीं हुआ है और न होगान वह उत्तरोत्तर बढ़ता ही जाएगा |

इसके विपरीत जिसका गौमाता में भाव नहीं है, जो उनके प्रति भेदबुद्धि रखता है उसको यमराज के दूत गीध जो सर्प से भी ज्यादा क्रोधी हैं, उसे नोंच-नोच कर खाते हैं | ये भगवान् ने भागवत में सनकादिकों से कहा था –

ये मे तनूर्द्विजवरान्दुहतीर्मदीया भूतान्यलब्धशरणानि च भेदबुद्ध्या।
द्रक्ष्यन्त्यघक्षतदृशो ह्यहिमन्यवस्तान् गृध्रा रुषा मम कुषन्त्यधिदण्डनेतुः ॥

(भागवत ३/१६/१०)

ये तीन भगवान् के शरीर हैं – `द्विजवर' माने श्रेष्ठ भक्त ब्राह्मण, दूध देने वाली गाय और अनाथ प्राणी। जो इनको भेदबुद्धि से देखता है निश्चित उसको नारकीय यातनाएँ भोगनी पढ़ती हैं | जिसका गौ माता में भाव नहीं वह मनुष्य नहीं असुर है क्योंकि असुर ऐसा काम करते थे –

जेहिं जेहिं देस धेनु द्विज पावहिं। नगर गाऊं पुर आगि लगावहिं।

(मानस. बाल. १८३)

जिस नगर में गौ-ब्राहमण उनको दिखाई पढ़ते थे, उसमें वे आग लगवा देते है | इसी पाप के कारण उनका शासन ज्यादा दिन तक नहीं टिका क्योंकि भागवत जी में लिखा है जब हिरण्यकशिपू का अत्याचार बड़ा था उस समय ये आकाशवाणी हुई थी –

यदा देवेषु वेदेषु गोषु विप्रेषु साधुषु।
धर्मे मयि च विद्वेषः स वा आशु विनश्यति ॥

(भागवत ७/४/२७)

'जब कोई प्राणी देवता, वेद, गाय, ब्राह्मण, साधु, धर्म और भगवान् से द्वेष करने लगता है, तब शीघ्र ही उसका विनाश हो जाता है |' जिन शासकों ने गायों से द्वेष किया वे नहीं टिक पाए | शासन तभी अविचल रहेगा, जब शासक धर्म पर चलेगा, भारतीय संस्कृति की रक्षा करेगा, सनातन धर्म का संरक्षण व पोषण करेगा | अगर वह ऐसा नहीं करता है तो शीघ्र नष्ट हो जाएगा | इसका प्रमाण है भारतीय इतिहास, अगर इतिहास उठाकर देखो तो पता चलेगा कि भारत में कितने विदेशी शासक आगे, सैकड़ों वर्षों तक भारत को गुलामी से गुजरना पड़ा |

भारत में विदेशी आक्रमण एक संक्षिप्त विवरण

भारत में सर्वप्रथम प्रवेश डेमेट्रिय प्रथम का है, इसके बाद भारत का कुछ भाग जीतकर यूक्रेटाइडस ने तक्षशिला को राजधानी बनाया अनन्तर मीनेंडर के द्वारा भारत में यूनानी सत्ता स्थापित हुई। यूनानियों के बाद शक (सीथियन) आये, फिर पार्थियन – जो मूल में ईरानी थे। इनके पश्चात् कुषाण – जो चीनी तुर्किस्तानी थे। कनिष्क इस वंश का पराक्रमी शासक था। आगे हुविष्क हुआ और अन्तिम सम्राट हुआ वासुदेव।

चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा गुप्तवंश स्थापित हुआ। उसके पुत्र समुद्रगुप्त द्वारा गुप्त साम्राज्य का विस्तार हुआ अनन्तर चन्द्रगुप्त, महेन्द्रादिव्य, स्कन्द गुप्त आदि शासक हुए।

गुप्त साम्राज्य में विघटन हुआ तो वर्धन वंश आया, जिसमें हर्षवर्द्धन हुआ। गुजरात में प्रतिहार वंश, कन्नौज में गहड़वाल वंश, दिल्ली में चौहान वंश, बुन्देलखण्ड में चन्देलवंश, मालवा में परमार वंश, गुजरात में चालुक्य वंश, बंगाल में पाल वंश, कर्नाटक में सेनवंश, गान्धार प्रदेश में हिन्दुशाही वंश, काश्मीर में कार्कोट वंश, उत्पल वंश व लोहार वंश। दक्षिण में राष्ट्रकूट वंश, उड़ीसा में पूर्वीगंग वंश का शासन रहा।

मध्यकालीन भारत में अरबों, तुर्कों ने आक्रमण किया। इसके पश्चात् महमूद गजनवी का आक्रमण हुआ। अनन्तर मोहम्मद गोरी आया। यह भारत के लिए बड़ा विध्वंसकारी काल रहा। गोरी की मृत्यु के उपरान्त उसके गुलाम कुतुबुद्दीन एबक का शासन हुआ जिसने गुलाम वंश की नींव डाली। गुलाम वंश के बाद तो फिर खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश, लोदी वंश और अंत में मुगल वंश

का स्थापक बाबर आया, जिसका मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंह (राणा सांगा) के साथ खानवा के मैदान में भीषण युद्ध हुआ दो बार राणा सांगा ने बाबर को धूल चटाई परन्तु तीसरे युद्ध में छल से बाबर ने राणा सांगा को परास्त किया और फिर वही बलात् धर्म परिवर्तन का अमानवीय कृत्य। मुगलवंश में बाबर के बाद क्रमशः हुमायूँ पुत्र अकबर पुत्र जहाँगीर पुत्र शाहजहाँ पुत्र औरंगजेब के हाथ में सत्ता आई। इस क्रूर शासक ने उत्तरप्रदेश, राजस्थान, पंजाब प्रदेश के गुर्जर व जाटों पर ऐसा कहर बरसाया कि साफ-साफ खुले शब्दों में कह दिया – 'मुसलमान बनो या सिर कटवाओ।'

अस्तु इस विवरण से पता चलता है कि हम लोगों पर विदेशियों का कितना शासन रहा, उन्होंने हमारी संस्कृति का नाश किया, हमारे धर्म का नाश किया, यवन-आक्रान्ताओं के भीषण अत्याचार, "बलात धर्म-परिवर्तन" आदि से हिन्दू-धर्म का कितना ह्रास हुआ। किन्तु इनमें से कोई भी दीर्घकाल तक भारत पर शासन नहीं कर पाया, किसी की सत्ता टिका नहीं | यद्यपि ये चाहते तो थे कि सारे भारत पर हम अखण्ड शासन करें किन्तु इन सभी ने थोड़े-थोड़े समय तक ही राज्य किया | १०० वर्ष से अधिक किसी वंश का शासन नहीं रहा, इन सबके शासन अन्त में समाप्त हो गये, क्यों समाप्त हुए, उसका कारण था श्रीमद्भागवत में वर्णित आकाशवाणी, जो हिरण्यकशिपु के अत्याचारों से संतप्त जगत को आश्वस्त करने के लिए हुई थी – (भागवतजी ७/४/२७) जो देवताओं से, वेदों से, गायों से, ब्राह्मणों से, साधु-संतों, धर्म और भगवान् से द्वेष करता है, उसका शीघ्र ही विनाश हो जाता है |

.....

महर्षि च्यवन की गौ भक्ति

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी माधुरी जी, मानमन्दिर, बरसाना

अगर ईमानदारी से गौसेवा प्रारम्भ हो जाए तो कलियुग समाप्त हो जाएगा क्योंकि गौवंश के अत्याचार से ही कलियुग का प्रारम्भ हुआ था, आज गौवंश पर अत्याचार हो रहा इसीलिये कलियुग बढ़ रहा है, जिस दिन गौहत्या बंद हो जायेगी उसी दिन सत्ययुग आ जाएगा | देश की रक्षा एवं देश की सुख-समृद्धि गायों की रक्षा से होती है | ये च्यवन ऋषि ने महाभारत में राजा नहुष के समक्ष कहा था –

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम् ।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति ॥

(महा.अनु. ५१/३२)

'जिस देश में गायें निर्भय श्वास छोड़ती हैं अर्थात् उन्हें किसी प्रकार का भय नहीं होता है, वह देश सुशोभित होता है और गौ माता उस देश के सारे पाप का अपकर्षण कर लेती हैं |'महाभारत का बड़ा प्रसिद्ध आख्यान है कि जिस समय महर्षि च्यवन गंगा-यमुना के संगम प्रयागराज में नदी की धारा में जल समाधि लिये तप कर रहे थे, तो उस समय कुछ मछुआरों ने नदी में जाल डाला और उस जाल में फँसकर के मछलियों के साथ च्यवन ऋषि भी बाहर आ गये। अब तो मछुआरे बहुत घबराये कि क्या करें हमने ऋषि की तपस्या में विघ्न पहुँचाया है ये हमसे अपराध हो गया तो च्यवन ऋषि ने कहा कि घबराओ मत, यह तुमने कोई अपराध नहीं किया है । उन्होंने राजा नहुष को बुलवाया क्योंकि उस समय उन्हीं का राज्य था, च्यवन ऋषि ने उनसे कहा कि इन मछुआरों की तो वृत्ति ही यही है । आप इन मछलियों के साथ-साथ मेरा मूल्य भी इन मछुआरों को चुका दीजिए और मछलियों सहित हमें इनसे मुक्त करा दीजिये | तब राजा नहुष ने सौ स्वर्ण मुद्रा, फिर एक हजार स्वर्ण मुद्रा फिर एक करोड़ स्वर्ण मुद्रा दी । च्यवन ऋषि ने कहा – क्या एक करोड़ स्वर्ण मुद्रा किसी ऋषि का मूल्य हो सकती हैं ? तब राजा ने आधा राज्य, फिर पूरा राज्य च्यवन ऋषि को समर्पित कर दिया ।

च्यवन ऋषि बोले – नहीं, अभी तुमने मेरा मूल्यांकन ठीक-ठीक नहीं किया है। अब राजा नहुष बड़े परेशान हो गये कि क्या करें, उसी समय वहाँ पर गौजात मुनि आये, गाय के पेट से इनका जन्म हुआ था इसलिए इनका नाम गौजात था। राजा नहुष उनसे बोले – महाराज! एक बहुत बड़ी समस्या आ गयी है, इन मछुआरों को च्यवन ऋषि का मूल्य देना है। अपना पूरा राज्य तो इन पर लगा चुका, अब इससे ज्यादा मूल्य मेरे पास है नहीं, आप कृपा करके बतायें कि एक महर्षि का मूल्य क्या हो सकता है। गौजात मुनि ने कहा – राजन्! एक गौदान कर दो, महर्षि का मूल्य पूर्ण हो जायेगा। उसी समय राजा नहुष के सामने एक गाय लायी गयी। नहुष ने च्यवन ऋषि से पूछा – महाराज! क्या यह गाय आपके मूल्य के बराबर है ? महर्षि प्रसन्न हो गये और बोले – गौधन के समान कोई दूसरा धन नहीं है। गौधन ही परम धन है। पूरा राज्य भी एक ऋषि का मूल्य नहीं चुका पाया और जैसे ही गौजात ऋषि के परामर्श से राजा नहुष ने च्यवन ऋषि का मूल्यांकन एक गौ से किया तो ऋषि प्रसन्न होकर बोले कि ये मूल्य तो हमसे भी ज्यादा है |

.....

ऐसी कथा ब्रह्मवैवर्त पुराण में भी आयी है – पार्वती जी ने पुत्र प्राप्ति हेतु 'पुण्यक व्रत' किया था और इस पुण्यकव्रत में उन्होंने सनकादिकों को पुरोहित बनाया था | व्रत की समाप्ति पर सनत्कुमारों ने पार्वतीजी से कहा कि हमारी दक्षिणा दो | पार्वतीजी ने कहा जो चाहिए सो माँग लो | तब उन्होंने यज्ञ की दक्षिणा के रूप में पार्वती जी से शिव जी को माँग लिया | पार्वतीजी शोकाकुल हो गयीं कि हम अपने स्वामी को कैसे दे सकते हैं, बहुत दुःखी हो गयीं | अन्तिम में भगवान् नारायण, ब्रह्मा जी और धर्म वहाँ प्रकट हो गए | सभी ने पार्वती जी से प्रार्थना की कि आप धर्म पर चलो और अपना वचन पूरा करो, सनकादिकों को दक्षिणा के रूप में अपने स्वामी शिव जी को दो | पार्वतीजी बहुत दुखी होकर कहने लगीं कि हम क्या करें ? हमारे पति चले जायेंगे तो फिर पुत्र होने पर भी हमको सुख नहीं मिलेगा क्योंकि पति सौ पुत्रों से ज्यादा सुख देता है | तब भगवान् नारायण ने कहा कि चिन्ता मत करो, तुम सनकादिकों को दक्षिणा रूप में महादेव जी को दे दो और बाद में उनका मूल्य देकर के वापिस ले लेना | पार्वतीजी ने कहा कि महादेव जी का मूल्य क्या होगा ? ये साक्षात् भगवान् के अवतार हैं, भगवान् ही हैं, इनका क्या मूल्य हो सकता है ? तब वहाँ पर नारायण भगवान् ने कहा कि –

व्रतं पूर्णं कुरु शिवे शिवं दत्वा च दक्षिणाम् |
पुनः समुचितं मूल्यं दत्त्वा नाथं ग्रहीश्यसि ||
विष्णुदेहा यथा गावो विष्णुदेहस्तथा शिवः |
द्विजाय दत्वा गोमूल्यं गृहाण स्वामिनं शुभे |
गोमूल्यं मत्पतिसमं इति वेदे निरूपतम् ||

जिस प्रकार गौ माता हमारा शरीर है, वैसे ही शिव जी भी हमारा ही स्वरूप हैं अतः एक गाय सनकादिकों को दे देना और उसके बदले में अपने स्वामी को वापस ले लेना क्योंकि शिवजी का मूल्य एक गाय के बराबर है |

.....

पाण्डवों की गौ-भक्ति

संकलनकर्त्री एवं लेखिका व्यासाचार्या साध्वी नवलश्री जी, मानमन्दिर, बरसाना

जब पाण्डव विराटनगर में छिपकर के अज्ञातवास का काल यापन कर रहे थे, उस समय दुर्योधन ने उनको बहुत खोजा किन्तु पाण्डवों का कहीं पता नहीं चला, वह पाण्डवों को इसलिए खोज रहा था क्योंकि यह शर्त रक्खी गई थी कि पाण्डवों को १२ वर्ष वन में वास करना है और एक वर्ष अज्ञातवास में रहना है यानी जहाँ कोई उनको पहचान न सके, अगर अज्ञातवास के काल में पाण्डवों का पता लगा लिया जाता है तो पुनः उनको १३ वर्ष के लिये

वन में जाना पड़ेगा | इसलिए दुर्योधन उनको सर्वत्र खोज रहा था किन्तु जब उसे पाण्डव कहीं नहीं मिले तब वह अंतिम में हारकर के भीष्म पितामह के पास आया और बोला पितामह ! आप कभी झूठ नहीं बोलते हैं | आप हमें बता सकते हैं कि इस समय पाण्डव कहाँ हैं | भीष्म बोले दुर्योधन ! हमें पता नहीं है कि पाण्डव इस समय कहाँ हैं, मैं तुमसे बिलकुल सत्य वचन कह रहा हूँ | दुर्योधन बोला कि ठीक है आपको पता नहीं है लेकिन आप अंदाज तो बता सकते हैं कि इस समय पाण्डव कहाँ होंगे ? तब भीष्म जी ने कहा – 'हाँ' अंदाज हम बता देंगे कि पाण्डव कहाँ हैं | उस समय भीष्म जी ने यह श्लोक कहा –

गावश्च बहुलास्तत्र न कृशा न च दुर्बलाः |
पयांसि दधिसर्पींषि रसवन्ति हितानि च ||

(महा. विराट. २८|२२)

'जिस स्थान पर गायें बहुत हों, और वे कमजोर या दुर्बल न हों, जहाँ रसीला और हितकारी दूध-दही-घृत बहुत होता हो, समझ लो उसी स्थान पर पाण्डव हैं |' तब दुर्योधन ने पता लगबाया कि कहाँ पर गायें ज्यादा हैं | उस समय विराटनगर में बहुत गायें थीं, दुर्योधन ने इससे अनुमान लगा लिया कि यहीं पाण्डव छिपकर रह रहे हैं | तब उसने योजना बनाई कि वहाँ से गायों को चुराया जाय, अगर वहाँ पाण्डव होंगे तो वे अवश्य गायों की रक्षा के लिये आयेंगे | ऐसा हो ही नहीं सकता है कि गायों को चोर ले जा रहे हों और पाण्डव चुप बैठे रहें | जो सच्चा गौभक्त होता है वह गायों पर होते अत्याचार को देखकर चुप नहीं बैठता है | आज देश में सच्चे हिन्दू नहीं हैं | सच्चा हिन्दू चुप नहीं रहेगा | कौरवों ने गायें चुराईं और ले जाने लगे, तब अर्जुन से उनका बड़ा भारी युद्ध हुआ, उसमें अर्जुन ने अकेले ही बड़े-बड़े सभी महारथियों को पराजित कर दिया | कर्ण, भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य सब पराजित हुये | महाभारत का फैसला तो पहले दिन ही हो गया | गाय चुराने वाले हारे और गाय की रक्षा करने वाले जीते |

.....

सुरभि गाय की कृपा से शिवजी की रक्षा

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी चंद्रमुखी जी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीमद्भागवत में लिखा है कि अगर महादेव जैसा भी कोई भक्तापराध करेगा तो वो भी नष्ट हो जाएगा-

न विक्रिया विश्वसुहृत्सखस्य साम्येन वीताभिमतेस्तवापि |
महद्विमानात् स्वकृताद्धि मदृङ्ग नङ्क्ष्यत्यदूरादपि शूलपाणिः ॥

(भा. ५/१०/२५)

स्कन्दपुराण में कथा आती है – एक बार शिव जी से ऋषियों का अपराध हो गया था, जिससे उनके शरीर में दाह उत्पन्न हो गया, वह भक्तापराध की अग्नि में जलने लगे | जब उन्हें कहीं शान्ति नहीं मिली तो वह सीधे गोलोक गए और जाकर उन्होंने सुरभि गाय का स्तवन किया –

'सृष्टि, स्थिति और विनाश करनेवाली हे मां तुम्हें बार बार नमस्कार है । तुम रसमय भावो से समस्त पृथ्वीतल, देवता और पितरोंको तृप्त करती हो । सब प्रकारके रसतत्वोंके मर्मज्ञो ने बहुत विचार करनेपर यही निर्णय किया कि मधुर रसका आस्वादन प्रदान करनेवाली एकमात्र तुम्ही हो । सम्पूर्ण चराचर विश्व को तुम्हीने बल और स्नेहका दान दिया है । तुम अग्नि और देवताओ को तृप्त करनेवाली हो और इस स्थावर जंगम-सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त हो । देवि ! तुम सर्वदेवमयी, सर्वभूत समृद्धिदायिनी और सर्वलोकहितैषिणी हो, अतएव मेरे शरीरका भी हित करो । अनघे ! मैं प्रणत होकर तुम्हारी पूजा करता है । तुम विश्व दु:खहारिणी हो, मेरे प्रति प्रसन्न हो । है अमृतसम्भवे ! ब्राहाणों के शापानलसे मेरा शरीर दग्ध हुआ जा रहा है, तुम उसे शीतल करो । जो समुद्र मंथन के समय तीक्ष्ण कालकूट विष से नहीं जले, वह भक्तापराध से जल रहे थे, यह प्रमाण है, जिस शंकर ने

कालकूट विष को हजम कर लिया लेकिन भक्तापराध को हजम नहीं कर पाए। गोलोक में गए, सुरभि गाय की स्तुति की जो राधारानी को दूध पिलाती है, तब गाय ने उन्हें उपाय बताया कि तुम मेरे शरीर में प्रवेश कर जाओ इससे तुम्हारी जलन शान्त हो जायेगी।

भगवान् शिव ने सुरभि गौ माता की प्रदक्षिणा की और जैसे ही गाय ने 'ॐ मा' उच्चारण किया, शिव जी गौ माता के पेट में चले गए। वहाँ उनको परम शीतलता प्राप्त हुई। इधर शिवजी के न होने से सारे जगत् में हाहाकार मच गया। शिव जी के न होने से सारी सृष्टि शव के सामान प्रतीत होने लगी। तब देवताओ ने स्तवन करके ब्राह्मणों को प्रसन्न किया और उनसे पता लगाकर वे उस गोलोक में पहुंचे, जहाँ पायस का पङ्क, घी की नदी, मधु के सरोवर विद्यमान हैं। वहाँ के सिद्ध और सनातन देवता हाथों में दही और पीयूष लिये रहते हैं।

गोलोक में उन्होंने सूर्यके समान तेजस्वी 'नील' नामक सुरभि सुतको गौ माता के पेट में देखा। देवता एवं ब्राह्मणों की स्तुति विनती सुनने पर भगवान् शंकर ही इस वृषभ के रूपमें अवतीर्ण हुए थे।

सुरभि गौ की उत्पत्ति की कथा

(महाभारत अनुशासन पर्व के आधार पर)

सृष्टि के प्रारंभ में स्वयम्भू ब्रह्मा जी ने प्रजापति दक्ष को यह आज्ञा दी 'तुम प्रजा की सृष्टि करो', किंतु प्रजापति दक्ष ने प्रजा के हित की इच्छा से सर्वप्रथम उनकी आजीविका का ही निर्माण किया। प्रभु! जैसे देवता अमृत का आश्रय लेकर जीवन-निर्वाह करते हैं, उसी प्रकार समस्त प्रजा आजीविका के सहारे जीवन धारण करती है। स्थावर प्राणियों से जंगम प्राणी सदा श्रेष्ठ हैं। उनमें भी मनुष्य और मनुष्यों में भी ब्राह्मण श्रेष्ठ है; क्योंकि उन्हीं में यज्ञ प्रतिष्ठित है। यज्ञ से सोम की प्राप्ति होती है और वह यज्ञ गौओं में प्रतिष्ठित है, जिससे देवता आनंदित होते हैं। अतः पहले आजीविका है फिर प्रजा।

समस्त प्राणी उत्पन्न होते ही जीविका के लिये कोलाहल करने लगे। जैसे भूखे-प्यासे बालक अपने मां-बाप के पास जाते हैं, उसी प्रकार समस्त जीव जीविकादाता दक्ष के पास गये। प्रजाजनों की इस स्थिति पर मन-ही-मन विचार करके भगवान प्रजापति ने प्रजावर्ग की आजीविका के लिये उस समय अमृत का पान किया। अमृत पीकर जब वे पूर्ण तृप्त हो गये, तब उनके मुख से सुरभि (मनोहर) गंध निकलने लगी। सुरभि गंध के निकलने के साथ ही 'सुरभि' नामक गौ प्रकट हो गयी, जिसे प्रजापति ने अपने मुख से प्रकट हुई पुत्री के रूप में देखा। उस सुरभि ने बहुत-सी 'सौरभेयी' नाम वाली गौओं को उत्पन्न किया, जो सम्पूर्ण जगत के लिये माता समान थीं। उन सब का रंग सुवर्ण के समान उद्दीप्त हो रहा था। वे कपिला गौएँ प्रजाजनों के लिये आजीविकारूप दूध देने वाली थीं। जैसे नदियों की लहरों से फेन उत्पन्न होता है, उसी प्रकार चारों ओर दूध की धारा बहाती हुई अमृत (सुवर्ण) के समान वर्ण वाली उन गौओं के दूध से फेन उठने लगा। एक दिन भगवान शंकर पृथ्वी पर खड़े थे। उसी समय सुरभि के एक बछड़े के मुंह से फेन निकलकर उनके मस्तक पर गिर पड़ा। इससे वे कुपित हो उठे और अपने ललाटजनित नेत्रों से, मानो रोहिणी को भस्म कर डालेंगे, इस तरह उसकी ओर देखने लगे। रुद्र का वह भयंकर तेज जिन-जिन कपिलाओं पर पड़ा, उनके रंग नाना प्रकार के हो गये। जैसे सूर्य बादलों को अपनी किरणों से बहुरंगा बना देते हैं, उसी प्रकार उस तेज ने उन सबको नाना वर्ण वाली कर दिया। परंतु जो गौएँ वहाँ से भागकर चन्द्रमा की ही शरण में चली गयीं, वे जैसे उत्पन्न हुई थीं वैसे ही रह गयीं। उनका रंग नहीं बदला। उस समय क्रोध में भरे हुए महादेव जी से दक्ष प्रजापति ने कहा- 'प्रभो ! आपके ऊपर अमृत का छींटा पड़ा है। गौओं का दूध बछड़ों क पीने से जूठा नहीं होता। जैसे चन्द्रमा अमृत का संग्रह करके फिर उसे बरसा देता है, उसी प्रकार ये रोहिणी गौएँ अमृत से उत्पन्न दूध देती हैं। जैसे वायु, अग्नि, सुवर्ण, समुद्र और देवताओं का पीया हुआ अमृत - ये वस्तुऐं उच्छिष्ट नहीं होतीं, उसी प्रकार बछड़ों के पीने पर उन बछड़ों के प्रति स्नेह रखने वाली गौ भी दूषित या

उच्छिष्ट नहीं होती। (तात्पर्य यह कि दूध पीते समय बछड़े के मुंह से गिरा हुआ झाग अशुद्ध नहीं माना जाता)। ये गौएँ अपने दूध और घी से इस सम्पूर्ण जगत का पालन करेंगे। सब लोग चाहते हैं कि इन गौओं के पास मंगलकारी अमृतमय दुग्ध की संपत्ति बनी रहे।'

ऐसा कहकर प्रजापति ने महादेव जी को बहुत-सी गौएँ और एक बैल भेंट किये तथा इसी उपाय के द्वारा उनके मन को प्रसन्न किया। महादेव जी प्रसन्न हुए। उन्होंने वृषभ को अपना वाहन बनाया और उसी की आकृति से अपनी ध्वजा को चिह्नित किया, इसलिये वे 'वृषभध्वज' कहलाये। तदनन्तर देवताओं ने महादेव जी को पशुओं का अधिपति बना दिया और गौओं के बीच में उन महेश्वर का नाम 'वृषभांक' रख दिया।

(ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार)

एकदा राधिकानाथो राधया सह कौतुकात् ॥
गोपांगनापरिवृतः पुण्यं वृन्दावनं ययौ ॥

एक समय की बात है। गोपांगनाओं से घिरे हुए राधापति भगवान श्रीकृष्ण कौतूहल वश श्रीराधा के साथ पुण्य-वृन्दावन में गये। वहाँ वे विहार करने लगे। उस समय कौतुकवश उन स्वेच्छामय प्रभु के मन में सहसा दूध पीने की इच्छा जाग उठी।

सहसा तत्र रहसि विजहार च कौतुकात् ॥
बभूव क्षीरपानेच्छा तदा स्वेच्छापरस्य च ॥
ससृजे सुरभीं देवीं लीलया वामपार्श्वतः ॥

तब भगवान ने अपने वामपार्श्व से लीलापूर्वक सुरभी गौ को प्रकट किया। उसके साथ बछड़ा भी था। वह दुग्धवती थी। उस सवत्सा गौ को सामने देख सुदामा ने एक रत्नमय पात्र में उसका दूध दुहा। वह दूध सुधा से भी अधिक मधुर तथा जन्म और मृत्यु को दूर करने वाला था। स्वयं गोपीपति भगवान श्रीकृष्ण ने उस गरम-गरम स्वादिष्ट दूध को पीया। फिर हाथ से छूटकर वह पात्र गिर पड़ा और दूध धरती पर फैल गया। उस दूध से वहाँ एक सरोवर बन गया। उसकी लंबाई और चौड़ाई सब ओर से सौ-सौ योजन थी। गोलोक में वह सरोवर 'क्षीरसरोवर' नाम से प्रसिद्ध हुआ है। गोपिकाओं और श्रीराधा के लिये वह क्रीड़ा-सरोवर बन गया। भगवान की इच्छा से उस क्रीड़ावापी के घाट तत्काल अमूल्य दिव्य रत्नों द्वारा निर्मित हो गये। उसी समय अकस्मात असंख्य कामधेनु प्रकट हो गयीं। जितनी वे गौएँ थीं, उतने ही बछड़े भी उस सुरभी गौ के रोमकूप से निकल आये। फिर उन गौओं के बहुत-से पुत्र-पौत्र भी हुए, जिनकी संख्या नहीं की जा सकती। यों उस सुरभी देवी से गौओं की सृष्टि कही गयी, जिससे सम्पूर्ण जगत व्याप्त है। पूर्वकाल में भगवान श्रीकृष्ण ने देवी सुरभी की पूजा की थी। तत्पश्चात् त्रिलोकी में उस देवी की दुर्लभ पूजा का प्रचार हो गया। दीपावली के दूसरे दिन भगवान श्रीकृष्ण की आज्ञा से देवी सुरभी की पूजा सम्पन्न हुई थी। देवी सुरभी का ध्यान, स्तोत्र, मूलमन्त्र तथा पूजा की विधि वेदोक्त क्रम इस प्रकार है, सुनो। 'ऊँ सुरभै नमः' सुरभी देवी का यह षडक्षर-मन्त्र है। एक लाख जप करने पर मन्त्र सिद्ध होकर भक्तों के लिये कल्पवृक्ष का काम करता है। ध्यान और पूजन यजुर्वेद में सम्यक प्रकार से वर्णित हैं। जो ऋद्धि, वृद्धि, मुक्ति और सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाली हैं; जो लक्ष्मीस्वरूपा, श्रीराधा की सहचरी, गौओं की अधिष्ठात्री, गौओं की आदि जननी, पवित्ररूपा, पूजनीया, भक्तों के अखिल मनोरथ सिद्ध करने वाली हैं तथा जिनसे यह सारा विश्व पावन बना है, उन भगवती सुरभी की मैं उपासना करता हूँ। कलश, गाय के मस्तक, गौओं के बाँधने के खंभे, शालग्राम की मूर्ति, जल अथवा अग्नि में देवी सुरभी की भावना करके द्विज इनकी पूजा करें। जो दीपमालिका के दूसरे दिन पूर्वाह्णकाल में भक्तिपूर्वक भगवती सुरभी की पूजा करेगा, वह जगत में पूज्य हो जाएगा।

एक बार वाराहकल्प में देवी सुरभी ने दूध देना बंद कर दिया। उस समय त्रिलोकी में दूध का अभाव हो गया था। तब देवता अत्यन्त चिन्तित होकर ब्रह्मलोक में गये

और ब्रह्मा जी की स्तुति करने लगे। तदनन्तर ब्रह्मा जी की आज्ञा पाकर इन्द्र ने देवी सुरभी की स्तुति आरम्भ की| इन्द्र ने कहा – देवी एवं महादेवी सुरभी को बार-बार नमस्कार है। जगदम्बिके! तुम गौओं की बीजस्वरूपा हो; तुम्हें नमस्कार है । तुम श्रीराधा को प्रिय हो, तुम्हें नमस्कार है। तुम लक्ष्मी की अंशभूता हो, तुम्हें बार-बार नमस्कार है । श्रीकृष्ण-प्रिया को नमस्कार है। गौओं की माता को बार-बार नमस्कार है। जो सबके लिये कल्पवृक्षस्वरूपा तथा श्री, धन और वृद्धि प्रदान करने वाली हैं, उन भगवती सुरभी को बार-बार नमस्कार है। शुभदा, प्रसन्ना और गोप्रदायिनी सुरभी देवी को बार-बार नमस्कार है। यश और कीर्ति प्रदान करने वाली धर्मज्ञा देवी को बार-बार नमस्कार है।

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नमः।
गवां बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके ॥
नमो राधाप्रियायै च पद्मांशायै नमो नमः।
नमः कृष्णप्रियायै च गवां मात्रे नमो नमः ॥
कल्पवृक्षस्वरूपायै सर्वेषां सततं परम्।
श्रीदायै धनदायै च वृद्धिदायै नमो नमः ॥
शुभदायै प्रसन्नायै गोप्रदायै नमो नमः।
यशोदायै कीर्तिदायै धर्मज्ञायै नमो नमः ॥

(प्रकृतिखण्ड ४७/२४-२७)

इस प्रकार स्तुति सुनते ही सनातनी जगज्जननी भगवती सुरभी संतुष्ट और प्रसन्न हो उस ब्रह्मलोक में ही प्रकट हो गयीं। देवराज इन्द्र को परम दुर्लभ मनोवांछित वर देकर वे पुनः गोलोक को चली गयीं। देवता भी अपने-अपने स्थानों को चले गये। नारद! फिर तो सारा विश्व सहसा दूध से परिपूर्ण हो गया। दूध से घृत बना और घृत से यज्ञ सम्पन्न होने लगे तथा उनसे देवता संतुष्ट हुए।

भारत में ५० करोड़ से अधिक हिन्दू हैं अगर इनमें से कुछ लोग ही इस यज्ञ में सम्मिलित होकर सहयोग दें तो ८-१० करोड़ जो गौवंश बचा है वह सहजता से संरक्षित हो जाएगा और भारत पुनः सोने की चिड़िया बन जाएगा, भारत की भूमि पुनः अकृष्टपच्या (बिना-जोते बोये अन्न पैदा करने वाली) भूमि बन जायेगी।

राजर्षि दिलीप की गौ-भक्ति

(महाकवि कालीदासकृत 'रघुवंश महाकाव्य' के आधार पर)

संकलनकर्त्री एवं लेखिका बाल व्यासाचार्या दया जी, मानमन्दिर, बरसाना

अयोध्यानरेश महाराज दिलीप बड़े धर्मात्मा और पराक्रमी थे | इनका पराक्रम लोकविख्यात था | देवराज इन्द्र को भे इनकी सहायता अपेक्षित थी | किन्तु राजा दिलीप को कोई पुत्र नहीं था, इसीलिए वह एक बार अपने गुरु वसिष्ठ के पास गए और उनसे संतानहीन होने का कारण पूछा, वशिष्ठ जी ने कहा कि तुमसे एक अपराध हुआ है इसीलिए तुम्हें संतान से वंचित रहना पड़ रहा है। तुम्हारा अपराध है कि तुम एक बार देवासुर संग्राम में देवताओं की युद्ध में सहायता करके स्वर्ग से वापस अयोध्या लोट रहे थे, मार्ग में कामधेनु गाय तुमको मिलीं किन्तु शीघ्रता में तुमने उनको प्रणाम नहीं किया; जबकि वे उस समय इस आशा से मार्ग में खड़ी थीं कि राजा मुझे प्रणाम करेंगे तो उन्हें मैं भूरि-भूरि शुभाशीर्वाद दूँगी, किन्तु तुमने उनको प्रणाम नहीं किया, इसी कारण उन्होंने रुष्ट होकर शाप दे दिया कि – 'तू पुत्रहीन होगा।' बस इसी अपराध के कारण तुम्हें पुत्र की प्राप्ति नहीं हो रही है | गुरु जी की बात सुनकर महाराजा दिलीप अपनी गलती को स्मरण करके पश्चाताप करते हुए गुरु वशिष्ठ जी से बोले कि कोई तो उपाय होगा जिससे हमारे अपराध का मार्जन हो जाए और हमें एक पुत्र प्राप्त हो जाए | वसिष्ठ जी बोले – राजन् ! कामधेनु गाय ने शाप देते हुए यह भी कहा था कि यदि मेरी संतान का तुझपर अनुग्रह हो जाए तो भले ही तुझे संतान की

प्राप्ति हो जाए | इसलिए तुम कामधेनु गाय की पुत्री जो हमारे आश्रम पर है नंदिनी गौ, तुम यदि इनकी सेवा करके इन्हें सन्तुष्ट करलो तो इनके संतुष्ट होते ही तुम्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हो जायेगी। उसी दिन से राजर्षि दिलीप नंदनी गौ की सेवा में तन-मन से जुट गए, महारानी प्रातःकाल स्वयं उस गौ की विधिवत् पूजा करतीं, महाराज दिलीप गौचारण के लिए स्वयं वन जाते –

स्थित: स्थितामुच्चलित: प्रयातां
निषेदुषीमासनबन्धधीर: ।
जलाभिलाषी जलमाददानां
छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत् ॥

गौ जिधर भी जाती, उसके पीछे-पीछे चलते | वह बैठ जाती तो स्वयं भी उसके समीप बैठकर उसके शरीर को सहलाते | हरी-हरी दूब लाकर उसे खिलाते | उसके जल पीने पर स्वयं जल पीते | अपने उत्तरीय वस्त्र से उस पर बैठने बाले मच्छर, मक्खी आदि जीवों को उड़ाते अर्थात छाया की तरह गौ के साथ रहते और उनकी सेवा करते | इस तरह नंदिनी गौ की सेवा करते हुए उनको एक महीना बीत गया | एक दिन गौ माता ने महाराज दिलीप की परीक्षा लेनी चाही। जैसे ही प्रकृति का सौन्दर्य निहारते राजा दिलीप की दृष्टि फिरि नंदिनी गौ सघन वन में प्रवेश कर गईं | कुछ समय बाद अचानक उन्हें गौ माता की चीत्कार सुनाई पड़ी, वे उसी दिशा में शीघ्रता से बड़े और वहाँ पहुँचे जहाँ नंदनी गौ खड़ी थीं, वहाँ उन्होंने देखा कि एक सिंह उनको पकड़े हुए है, दिलीप ने जैसे ही तरकस से वाण निकालकर सिंह को मारना चाहा | उसी समय इनका हाथ वहीं स्तब्ध हो गया, यानी जड़वत् हो गया | तब सिंह ने मनुष्य भाषा में कहा – राजन् ! व्यर्थ उद्योग मत करो | मैं साधारण पशु नहीं हूँ | मैं शिव-पार्वती का कृपापात्र हूँ और उन्होंने ही मुझे अपने हाथों से लगाए इस देवदारु वृक्ष की रक्षा के लिये नियुक्त किया है | जो पशु अपने आप यहाँ आ जाते हैं वे ही मेरे आहार होते हैं | तब दिलीप बोले – मृगेन्द्र ! आप जगत के माता पिता शिव-पार्वती के सेवक हैं, अतः मैं आपको प्रणाम करता हूँ | आप अपनी क्षुधा निवृत्ति के लिये मुझे खालें, परन्तु मेरे गुरुदेव की इस गाय को छोड़ दें | सिंह ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा –

एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं
नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च |
अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्
विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम् ||

'आप युवा हैं, नरेश हैं, और आपको सभी भोग-सुख प्राप्त हैं | एक गौ के लिए इस प्रकार आपका देहत्याग करना उचित नहीं है | लगता है तुममें विचार करने की शक्ति बिल्कुल नहीं है |' अरे आप तो एक गौ के बदले अपने गुरु को लाखों गौएँ देकर संतुष्ट कर सकते हो, सिंह के द्वारा कही गयी इन बातों से राजा दिलीप अपने ध्येय से ज़रा भी बिचलित नहीं हुए और उन्होंने सिंह से कहा – "यह शरीर जीवित रखने से कोई लाभ नहीं, अगर हम गाय को नहीं बचा सकते, इससे तो मर जाना अच्छा है। मनुष्य को उतनी ही देर जीना चाहिए, जब तक मशाल की तरह उस में प्रकाश हो। अगर प्रकाश न रहे तो जीने से कोई लाभ नहीं, उससे अच्छा है मर जाना।" सिंह ने कहा – "तैयार हो जाओ मरने के लिए, दिलीप तैयार हो गए।" सिंह आकाश में ऊपर उछला, ये सिर नीचे करके बैठ गए, हिले नहीं कि सिंह हमारे ऊपर प्रहार करेगा। तब तक क्या देखते हैं कि एक फूलों की माला आकाश से उनके ऊपर आकर पड़ गयी। उन्होंने सामने देखा तो गाय मुस्कुरा रही थी, बोली – "मैंने तुम्हारी परीक्षा ली थी, तुम इसमें उत्तीर्ण हो गये हो। जाओ मेरी माँ का श्राप मिट गया। अब तुम्हारे एक बड़ा प्रतापी पुत्र होगा, जिसका नाम रघु होगा।" राजर्षि दिलीप को गौसेवा के प्रभाव से रघु जैसा प्रतापी पुत्र हुआ और इन्हीं रघु ने नाम पर आगे चलकर इस वंश का नाम रघुवंश पड़ा | जिसमें साक्षात् श्रीरघुनाथ जी प्रकट हुए |

परम भागवत श्रीनामदेवजी की गौ-भक्ति

(सिख धर्म के प्रधान ग्रन्थ 'गुरुग्रन्थसाहब' के आधर पर)

संकलनकर्त्री एवं लेखिका साध्वी ब्रजबाला जी, मानमन्दिर, बरसाना

बादशाह पूछै सुनु बे नामा ॥ देखउ राम तुम्हारे कामा ॥
नामा सुलताने बाधिला ॥ देखउ तेरा हरि बीठुला ॥
बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ॥ नातरु गरदनि मारउ ठांइ ॥
बादिसाह ऐसी किउ होइ ॥ बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ ॥
मेरा कीआ कछू न होइ ॥ करि है रामु होइ है सोइ ॥
बादिसाहु चड़्हिओ अहंकारि ॥ गज हसती दीनो चमकारि ॥
रुदनु करै नामे की माइ ॥ छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ॥
न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ ॥ पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ॥
करै गजिंदु सुंड की चोट ॥ नामा उबरै हरि की ओट ॥
काजी मुलां करहि सलामु ॥ इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु ॥
बादिसाह बेनती सुनेहु ॥ नामे सर भरि सोना लेहु ॥
मालु लेउ तउ दोजकि परउ ॥ दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ ॥
पावहु बेड़ी हाथहु ताल ॥ नामा गावै गुन गोपाल ॥
गंग जमुन जउ उलटी बहै ॥ तउ नामा हरि करता रहै ॥
सात घड़ी जब बीती सुणी ॥ अजहु न आइओ त्रिभवण धणी
पाखंतण बाज बजाइला ॥ गरुड़ चढ गोबिंद आइला ॥
अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥ गरुड़ चढ आए गोपाल ॥
कहहि त धरणि इकोडी करउ ॥ कहहि त ले करि ऊपरि धरउ ॥
कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ ॥ सभु कोई देखै पतीआइ ॥
नामा प्रणवै सेल मसेल ॥ गऊ दुहाई बछरा मेलि ॥
दूधहि दुहि जब मटुकी भरी ॥ ले बादिसाह के आगे धरी ॥
बादिसाहु महल महि जाइ ॥ अउघट की घट लागी आइ ॥
काजी मुलां बिनती फुरमाइ ॥ बखसी हिंदू मै तेरी गाइ ॥
नामा कहै सुनहु बादिसाह ॥ इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ ॥
इस पतीआ का इहै परवानु ॥ साचि सीलि चालहु सुलितान ॥
नामदेउ सभ रहिआ समाइ ॥ मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि ॥
जउ अब की बार न जीवै गाइ ॥ त नामदेव का पतीआ जाइ ॥
नामे की कीरति रही संसारि ॥ भगत जनां ले उधरिआ पारि ॥
सगल कलेस निंदक भइआ खेदु ॥ नामे नाराइन नाही भेदु ॥

भावार्थ – सन्तों ने भारत को बचाया है, जिस समय सिकन्दर लोदी का शासन था उसने देखा कि यदि नामदेव और कबीरदास यदि इनको दबा दिया जाए, तो हिन्दुस्तान के हजारों लाखों हिन्दू मुस्लिम बन जायेंगे | सिकन्दर लोदी ने नामदेव जी को बुलवाया दरबार में | सिंकन्दर ने उनसे कहा कि कुछ अपनी करामात दिखाओ | ये दरबार में तुम्हारे सामने मृत गाय पड़ी हुयी है इसको जीवित करके दिखाओ अन्यथा तुम्हारा सिर काट दिया जाएगा | नामदेव बोले जो प्राणी मर गया है वह पुनर्जीवित कैसे हो सकता है | सिकंदर बोला तुमको करना ही पड़ेगा, तब वे बोले कि राम चाहें तो कुछ भी हो सकता है लेकिन हममें सामर्थ्य नहीं है | तब सिकंदर ने उनको मारने के लिये एक खूनी हाथी को बुलवाया, और उसके सामने नामदेव के हाथ बांधकर उन्हें डाल दिया गया, उस समय नामदेव जी की माँ भी वहीं थीं वे रोने लगीं और बोलीं बेटा तू राम-राम कहना छोड़दे और खुदा खुदा कहने लग जा अर्थात् इस्लाम धर्म स्वीकार कर ले, इससे बादशाह प्रसन्न होकर तुझे छोड़ देगा, तेरी प्राण रक्षा हो जायेगी | तब नामदेव अपनी माँ पर रुष्ट हुए और बोले कि आज से न तू हमारी माँ है और न मैं तेरा बेटा हूँ, तू हमको ये शिक्षा देती है कि मैं इस बादशाह के सामने झुक जाऊं, इस्लाम को स्वीकार कर लूँ, अगर मैं ऐसा कर लूँगा तो ये बादशाह हजारों-लाखों हिन्दुओं को मुसलमान बना देगा और रही इस खूनी हाथी की बात तो इससे तो भगवान् हमारी रक्षा करेंगे, जब नामदेव जी नहीं झुके तो खूनी हाथी सिकंदर के आदेश से उन्हें मारने के लिये उनकी ओर बड़ा, उसने सूंढ़ से नामदेव पर प्रहार किया किन्तु भगवान् ने उस समय उनकी रक्षा की और उन्हें कुछ नहीं हुआ | इस चमत्कार से प्रभावित होकर दरबार में जितने काजी-मुल्ला थे वे सब नामदेव जी को शलाम करने ला गए और कहने लगे कि इसमें जरूर राम की शक्ति है, वे बोले बादशाह इनका स्वर्ण मुद्राएँ देकर सम्मान करो | लेकिन सिकन्दर नहीं माना, उसने नामदेव के हाथों में बेड़ियाँ डलवा दीं और नामदेव जी तो अपनी मस्ती में गोपाल के गुण गाते रहे, इस तरह ७ घड़ी का समय बीत गया उसी समय नामदेव जी ने देखा कि आकाश में गरुड़ पर बैठकर भगवान् चले आ रहे हैं, नामदेव जी ने प्रभु से प्रार्थना की कि प्रभो ! इस गाय को जीवित करदो और मेरे यश को बढ़ाओ, अगर इस गाय

के कर्म में जीवन नहीं लिखा है तो आप हमारी आयु इसको देकर जीवित कर दो, उन्होंने उस समय यह पद गाया था –

विनती सुन जगदीश हमारी |
तेरो दास आस मोहिं तेरी इत करु कान मुरारी ||
दीनानाथ दीन ह्वै टेरूँ गाइहिं क्यों न जियावो |
आछे सबै अंग हैं याके मेरे यशहि बढ़ावो |
जो कहूँ याके कर्महिं में नहिं जीवन लिख्यो विधाता |
नामदेव की आयुरदा सों होहु तुमहिं प्रभुदाता ||

उनकी प्रार्थना भगवान् ने सुन ली और गौमाता को जीवित कर दिया, इस घटना से सब लोग बड़े प्रभावित हुए और कहने लगे 'नामा सो नारायणा' अरे नामदेव ने मृत गौ को जिला दिया है, उनकी जय-जयकार होने लग गयी लेकिन सिकदंर को विश्वास नहीं हुआ, उसने कहा हम तब मानेंगे कि यह गाय जीवित हो गयी है जब तक इस गाय का तुम दूध निकालकर नहीं दिखाओगे, नामदेव जी ने गाय के बछड़े को बुलाकर गाय को एक पात्र दुहा और सारा दूध सिकंदर के सामने रख दिया, तब सिकंदर उनके सामने झुका और उनसे उसने क्षमा माँगी, नामदेव जी ने कहा कि पहले इसी समय फरमान जारी करो कि अब कभी किसी गाय पर, हिन्दू पर अत्याचार नहीं करोगे, सिकन्दर को उनकी बात स्वीकार करनी पड़ी |

१. पहले ब्रज में इतनी सुख-समृद्धि थी कि दूध-दही-माखन की नदियाँ बहती थीं, दिन-रात गान-नृत्य होता था, ये सब गौ-सेवा का ही पुण्य-प्रभाव था |
२. गौ सेवा से मान मंदिर का यश बढ़ रहा है, श्री बढ़ रही है और व्याधियाँ नष्ट हो रही हैं |
३. अड़सठ करोड़ तीर्थ एवं तैंतीस करोड़ देवताओं का सचल विग्रह है गाय।
४. जहाँ गायें हैं, गौ-भक्ति है; वहीं श्री है, विजय है, लक्ष्मी 'ऐश्वर्य-वैभव' है |
५. कृष्णलीलाकाल में गौ-पालन के कारण सारे ब्रज में ब्रजवासी स्वस्थ थे |
६. गौमाता को इष्ट मानकर, आराध्या समझकर उनकी सेवा करें, गौ सेवा को अपना व्यवसाय न वनाएँ |
७. अगर गाय सुरक्षित हो जाएँ तो देश की सभी आसुरी शक्तियाँ नष्ट हो जायेंगी |
८. जब से हमारे देश में गौ भक्ति घटी तब से कलियुग बढ़ा, अधर्म और पाप की वृद्धि हुयी |
९. विश्व के सबसे बड़े यज्ञ में आपकी छोटी सी आहूति घर बैठे लोक मंगल का हेतु बन सकती है | प्रतिदिन प्रति व्यक्ति एक रुपया नित्य निकालो और निकटस्थ पालित गोवंश की सेवा में लगाओ |
१०. जो गाय नहीं रख सकते, वह आर्थिक रूप से गौशालाओं में सहायता दें योगदान दें |
११. गौ रक्षक राम भक्त है, गौ नाशक रावण का वंशज है, क्योंकि रावण का आदेश था – जेहिं जेहिं देस धेनु द्विज पावहिं । नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं ॥
१२. संतों का कर्तव्य गाँव-गाँव में जाएँ और गौ सेवार्थ जन-जाग्रती पैदा करें |
१३. . 'वन' पर्वत, नदी और तीर्थों पर किसी का स्वामित्व नहीं होता; सबके लिये ये खुले रहते हैं। कोई उन्हें अपनी ही स्वत्व मानकर इनका परिग्रह न कर बैठे।'
१४. . सरकार तथा सार्वजनिक संस्थाओं को चाहिये कि वे वर्तमान या भावी गोशालाओं के उपयोग के लिये निःशुल्क गोचर भूमि प्रदान करें।
१५. . गोग्रास के निमित्त आये हुए पैसों में से एक पाई भी कभी भूल से भी अपने काम में मत लगाओ जितना बने अपनी ओर से गोहित में तन-मन-धन लगाते रहो। पर गौ के हक का द्रव्य और स्वत्व कभी भूल कर भी मत लो। इसी में भलाई है। गोमाता के नामपर पैसा खाने वालों को नरक का कीड़ा बनना पड़ता है। गौ के हक का द्रव्य तो साक्षात् अग्नि के अंगारे हैं। क्या अंगारों को कोई पचा सकेगा।

गो-रक्षा की अनिवार्यता

संत श्रीभक्तशरणजी, मानमंदिर, बरसाना (गह्वरवन)

धर्म, अर्थ काम, मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों के प्रदातृरूप एवं पृथ्वी के सप्त धारक तत्वों में प्रधानीभूत स्तम्भ स्वरूप में प्रतिष्ठापित गोवंश की महिमा से सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय आपूरित है –

माता रुद्राणां दुहिता बसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः |
प्रनुवोचं चिकितुषेजनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट ||

(ऋ.वेद ८/१०१/१५)

अर्थात् – गाय, रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री, आदित्यों की भगिनी व अमृत के केंद्र रूप में अवस्थित है, विचारशील मानव को निरपराध गाय का अनादर नहीं करना चाहिए | अतः वेदधर्मसंस्थापनार्थ गृहीत श्रीरामकृष्णाद्यवतारों में भी प्रभु ने स्वयं गोसेवा का एक उत्तम आदर्श स्थापित करके यह सिद्ध किया है कि धर्मसंस्थापन के अभाव में सामाजिक संतुलन एवं व्यावहारिक परिष्कार अत्यन्त दुष्कर है एवं गो-संरक्षण के अभाव में धर्मसंस्थापन रूप महत्कार्य का सम्पादन भी सर्वथा असंभव है | अतः समाज के सर्वविध उत्कर्ष का स्रोत होने के कारण मानवमात्र के लिए गाय की परम उपादेयता स्वतः सिद्ध है "गावो विश्वस्य मातरः" इस सूक्ति के अनुसार भी समूची मानव जाति गोमाता से उपकृत है, गोमाता सर्वसेव्या है | उसमें भी भारतीय सनातन मतावलम्बियों के तो किसी भी सत्कार्य का शुभारम्भ गव्य सामग्री के अभाव में संभव ही नहीं है, उनका मूल अस्तित्व ही गोवंश में सन्निहित है | अतः मनीषी महापुरुषों ने भारतीय जनमानस का परिचय प्रदान करते हुए कहा है –

गोषु भक्तिर्भवेद्यस्य प्रणवे च दृढा रतिः |
पुनर्जन्मनि च विश्वासः स वै हिन्दुरिति स्मृतः ||

अर्थात् गौवंश के प्रति जिसकी प्रबल निष्ठा है, वेद के प्रति दृढ़ आस्था है, एवं पुनर्जन्म की परम्परा में पूर्ण विश्वास है वही सच्चा सनातनी है, भारतीय है | आज सम्पूर्ण समाज के व्यावहारिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक, समुन्नत जीवन में गौवंश की परम उपयोगिता सिद्ध होने पर भी, लक्षशः गौवंश का आश्रयविहीन, होकर दर-दर की ठोकरें खाना, नृशंस पशुता को भी लज्जित करने वाले मानवजाति के कलंकभूत हृदयविहीन वधिकों के द्वारा तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति के लिए सहस्त्रों गायों की निर्ममता पूर्ण हत्या एवं प्रत्यक्ष व परोक्षरूप से गौहत्या के पक्षधर अदूरदर्शी सत्तालोलुप नराकार पशुओं का समाज द्वारा महिमामंडन व समर्थन, निश्चित ही हमारे भव्य भारत की परिकल्पना में एक भीषण अवरोध है और जब तक इस अवरोध का मूलोच्छेद नहीं होगा, जब तक भारतवर्ष की पावन धरा गौमाता के रक्त से सिक्त होती रहेगी, तबतक राष्ट्र में सुख शान्ति समृद्धि की कल्पना भी सर्वथा निरर्थक है | नीति का कथन है –

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूजनीयो न पूज्यते |
त्रयः तत्र जायन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम् ||

अर्थात्- जहाँ अधिकृत पुण्यपुरुषों की पूजा का व्यतिक्रम होता है और अनधिकृत अपुण्यपुरुषों की प्राथमिकता होती है, वहाँ निश्चित ही दुर्भिक्ष अर्थात् दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं का अभाव, मरण अर्थात् दैवी सम्पदा का विनाश, भय अर्थात् रोग शोकादि की सृष्टि संरचित होती है | भीषण भयावह वातावरण निर्मित होता है वहाँ, आज यह दृश्य सर्वसमक्ष है | समाज में कहीं भी शान्ति, सौहार्द का दर्शन नहीं है, उसका कारण है समाज द्वारा सर्वाराध्या पूज्या गोमाता की अवहेलनारूप पूज्यपूजाव्यतिक्रम, सर्वोपास्य भगवान् श्रीरामकृष्ण की भी उपास्या हैं गौमाता, स्वयं भगवान् गौ की उपासना करते हैं और शिक्षा देते हैं सम्पूर्ण जनमानस को कि यदि मेरी प्रियता विधान करना चाहते हो एवं चतुर्दिक् मंगल की सृष्टि चाहते हो तो गोसेवा करो -

गवां कण्डूयनं कुर्यात् गोग्रासं गो प्रदक्षिणाम् |
गोषु नित्यं प्रसन्नासु गोपालोऽपि प्रसीदति || (गौतमीय तन्त्र)

अर्थात् – गायों को खुजलाना, गोग्रास प्रदान करना एवं प्रदक्षिणा रूप गोसेवा करने से गोपालजी की प्रसन्नता प्राप्त होती है | इसलिए जब देवराज इन्द्र ने भीषण वृष्टि द्वारा ब्रजवासियों को पीड़ित किया और अन्त में गिरिराज धरण प्रभु के ऐश्वर्य से चमत्कृत होकर प्रणतभाव से क्षमा याचना की, तव

श्रीकृष्ण ने कहा - देवराज इन्द्र ! सम्पूर्ण ब्रजवासी मेरे परिकर हैं और गोमाता मेरी उपास्या है, अतः ये तुम्हारे भी पूज्य हैं परन्तु तुमने इनकी पूजा न करके प्रताड़ित किया है – पूज्य पूजाव्यक्तिक्रम से गोमाता और ब्रजवासियों का अपराध किया है अतः मेरी प्रियता विधान करना चाहते हो तो इस अपराध का मार्जन करो और इसका वास्तविक मार्जन है - पूज्या गोमाता की सेवा, इसलिए -

"क्षमापानाय कातरस्त्वं तद्जाति मातरं सुरभीमेव भजस्व | (गो. चम्पू) अर्थात् सम्पूर्ण गोवंश की आदि जननी 'श्रीसुरभि माता' की सेवा करो | यही 'पूज्यपूजाव्यतिक्रम दोष' अज्ञात अवस्था में राजर्षि दिलीप से हुआ था तब महर्षि वशिष्ठ की प्रेरणा से नन्दिनी गौ की सेवा कर उस अपराध से मुक्त हुए और रघु जैसे प्रतापी पुत्र का पिता होने का गौरव प्राप्त किया, इस प्रकार समय-समय पर स्वयं भगवान् तथा भगवदीय महापुरुषों ने अवतार ग्रहण कर गौसेवा रूप धर्म के प्रतिष्ठापनपूर्वक समाज को सचेत किया एवं इस गोऽपराध रूप भीषण दोष से मुक्ति प्रदान कर, चतुर्दिक् मंगल की सृष्टि की, ऐसी ही पावन परम्परा में "सर्वभूतेहितेरताः" की भव्य भावना से भावित भारत की दिव्य धरा को गौहत्या के कलंक से सर्वथा मुक्त करने के लिए दृढ़ संकल्पित एवं राष्ट्र के अनन्त अभ्युदय व अक्षुण्ण उत्कर्ष के लिए निरन्तर प्रयत्न परायण, श्रीधाम बरसाना की पावन भूमि में विगत ६५ वर्षों से अखण्ड ब्रजवास सम्पन्न अनन्त श्रीयुत परम श्रद्धेय पूज्यपाद सन्त श्री रमेश बाबाजी महाराज के द्वारा सन् २००७ में भारत वर्ष की गौरवभूता श्रीमाताजी गौशाला की स्थापना हुई और स्थापन काल में ही पूज्य श्री के द्वारा उद्घोषित हुआ कि यह गौशाला भारतवर्ष ही नहीं अपितु वैश्विक क्षिति तल में अपनी अनुपम कीर्ति का विस्तार करेगी | यद्यपि उस समय समान्य जनमानस के लिए यह कल्पनातीत विषय था, तथापि पूज्य श्री के संकल्प के परिणाम स्वरूप शनैः शनैः यह गौशाला अपने वृहद् स्वरूप को प्राप्त हुई और आज यहाँ लगभग ५५ हजार गौवंश स्वच्छंद सुखपूर्वक श्वास ले रहा है, मातृवत् पालित हो रहा है | निश्चित ही – **"अतीतमनागतञ्चैव सर्वं वै पश्यन्ति योगिनः"** इस सूक्ति के अनुसार आज के इस वृहद्-दृश्य को १० वर्ष पूर्व ही अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देख लिया था पूज्य श्री ने | तथापि इतने वृहद स्तर पर गो-संरक्षण रूप महत्कार्य के सम्पन्न होने पर भी चित्त में एक वेदना थी कि सर्वांश में गो-संरक्षण कैसे हो, सम्पूर्ण भारत भूमि किस प्रकार गोहत्या के कलंक से सर्वथा मुक्त हो ? अतः इसके लिए सार्वत्रिकी जनजागृति एवं व्यक्तिमात्र के गोसेवा से सम्बन्ध की आवश्यकता अनुभूत हुई और होलिकोत्सव के पावन पर्व पर श्रीधाम बरसाना की पावन भूमि में गोरक्षा के महत्त्व को प्रकाशित करते हुए सर्वसमाज के हित में सम्पूर्ण जनमानस के लिए पूज्य श्री बाबा महाराज ने यह दिव्य संदेश प्रदान किया कि वास्तव में यदि हम शीघ्र ही सर्वांश में गोरक्षा चाहते हैं तो सर्वकारीय तंत्र की मुखापेक्षिता के दौर्बल्य को त्यागकर व्यक्तिमात्र को स्वयं ही सक्रिय होना होगा एवं गौसेवा की पावन परम्परा से जुड़ना होगा और इसके लिए सर्वाधिक सुगम उपाय है कि प्रति व्यक्ति प्रतिदिन गोग्रास के रूप में अपनी अर्जित राशि से १ रूपया अवश्य ही गोसेवा के निमित्त निकालें जो कि किसी भी प्रकार से कठिन कार्य नहीं है और संचित राशि को अपनी निकटवर्तिनी गौशाला में अर्पित करें | इतने मात्र से ही निश्चित यह पावन धरा गौवध के कलंक से मुक्त हो जायेगी एवं इसके अनेक दृष्ट-अदृष्ट लाभ समाज को प्राप्त होंगे | इस पुनीत प्रक्रिया का आश्रय लेने पर मातृतुल्य परोपकारक गौवंश के प्रति कर्त्तव्य विमुखतारूपी दोष की निवृत्ति अर्थात् कर्मशुद्धि, अर्जित अर्थ का अंशांश परमार्थ निमित्त निकालने से आर्थिकी अशुचिता से मुक्ति अर्थात् अर्थशुद्धि – **"यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः"** एवं गोसेवा से सम्बन्ध होने पर तद्विषयक चिन्तन से मानसिक मालिन्य की निवृत्ति अर्थात् अन्तःकरण शुद्धि सहज सम्भव है और द्रव्य, कर्म, मन की शुद्धि होने पर समाज सहज में शान्ति, सौहार्द, समन्वय, सद्भाव आदि दैवी गुणों के संस्थापन पूर्वक सुख समृद्धि के सर्वोच्च शिखर को प्राप्त होगा | अतः इस महनीय कार्य के सम्पादन हेतु सर्वजन, विशेषतः गो-गोपालोपासक, राष्ट्रोपासक विचारक मनीषी महानुभावों के द्वारा एक सकारात्मक सक्रिय सहभागिता अत्यन्त अपेक्षित है एवं प्रति व्यक्ति कर्ता वक्ता व अनुमोदिता की सुदृढ़ भूमिका में आरूढ़ होकर शीघ्र ही सम्पूर्ण समाज में इस जनजाग्रति कारक परमोपकारक संदेश को प्रसारित करें, ऐसा प्रबल प्रयत्न अपेक्षित है | इस व्यापक अभियान का आश्रय लेने से निश्चित ही सर्वांश में गोसंरक्षण रूप कार्य की सहज सिद्धि एवं शीघ्र ही अतीत की भाँति विश्वगुरु पद पर प्रतिष्ठित एक दिव्य-भव्य भारत के दर्शन का सौभाग्य हम सबको प्राप्त होगा |

गो-संरक्षण के लिए एक अनोखी पहल

लेखक-श्री नारायण उपाध्याय जी, अवकाश प्राप्त न्यायाधीश

विभिन्न प्रजातियों की भारतीय देशी गायें हमारी सनातन संस्कृति एवं जीवनचर्या की आधार-शिला रही हैं | महाभारत ग्रन्थ में भगवान् की वाणी है –

सर्वे देवाः गवामङ्गे तीर्थाणि तत्पदेषु च ।
तद् गुह्येषु स्वयं लक्ष्मीस्तिष्ठत्येव सदार्पितः ॥

अर्थात् सभी देवता गाय के अंगों में रहते हैं, सभी तीर्थ गायों के चरणों (खुरों) में रहते हैं और गाय के गोबर में स्वयं लक्ष्मीजी का निवास है | इस प्रकार मात्र गाय की सेवा करने से तत्समय समस्त देवी-देवता प्रसन्न हो जाते हैं और मनुष्यों के (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) चारों पुरुषार्थों को सिद्ध करके मनुष्य जीवन सफल कर देते हैं | समृद्धि एवं वैभव की दृष्टि से उस विशेष कालखण्ड में भारतवर्ष को सोने की चिड़िया कहा जाता है | ज्ञान की दृष्टि से भारतवर्ष विश्वगुरु की उपाधि से विभूषित था | गौ आधारित कृषि से शुद्ध सात्विक अन्न पैदा होता था जिससे भारतवर्ष के निवासी काम, क्रोध, लोभ, छल, दंभ आदि विकारों से मुक्त थे और अपना पूरा समय परोपकार एवं भगवद्भजन ने व्यतीत करते थे | विदेशियों को भारतवर्ष की संपदा एवं विश्वगुरु होने के गौरव से ईर्ष्या हुई और उन्होंने भारतवर्ष पर आक्रमण करके उसे अपने आधीन कर लिया | अटूट संपदा भारत से लूटकर अपने देश ले गये और भारत को सदैव अपने आधीन बनाये रखने के लिए इसकी मेधा का हनन करने की ठान लिये | ब्रिटिश साम्राज्य ने भारत की समृद्धि का गहन अनुसंधान करवाया तो पाया कि भारतीय गायें और तत्कालीन गुरुकुल प्रणाली की शिक्षा ही उसकी समृद्धि और अलौकिक मेधा का मूल है | तब अंग्रेजो ने इन दोनों पर भरपूर प्रहार किया | सन् १७६० में पहला कसाई खाना खोला गया जिसमें दस हजार गायों का वध प्रतिदिन किया जाता और इस प्रकार एक वर्ष में लगभग एक करोड़ देशी गायें मारी जाने लगीं | गुरुकुलों पर प्रतिबंध लगाकर अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खोले गये | समय-समय पर विभिन्न महापुरुषों द्वारा गौवध पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए अनेक शासकों को विवश किया गया जिसमें स्वामी रामानन्दाचार्य, स्वामी हरिदास जी एवं श्री मलूकदास जी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है | जब भारतवर्ष को विदेशी सत्ता की गुलामी से मुक्ति मिली, तब महात्मा गांधी एवं नेहरु जैसे प्रभावशाली नेताओं ने कहा था कि आजादी मिलने पर पहला कानून गौवध रोकने से सम्बंधित बनेगा किन्तु विदेशी मुद्रा की लालच में सभी सरकारें इससे दूर ही रहीं | वर्तमान समय में कुछ आशा की किरण दिखाई पडी है जब भारत सरकार ने ७०० करोड़ की लागत से गायों के संरक्षण के लिए अलग मंत्रालय बनाने की घोषणा किया है तथा उत्तर-प्रदेश सरकार ने भी लावारिश गौवंश के संरक्षण के लिए कई गौशालायें स्थापित करने का आदेश दिया है | इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि इस प्रकार की सरकारी योजनायें बिना समुचित जन सहभागिता के सफल नहीं हो सकती हैं | यह सुखद विषय है कि वर्तमान समय में भी देश के अनेक संत-महात्मा अपनी-अपनी तरह से देशी गायों के संरक्षण-संवर्द्धन में लगे हुए हैं | इस कड़ी में ब्रज के परम विरक्त संत श्री रमेश बाबा का नाम सर्वोपरि है जिन्होंने गौरक्षा के अतिरिक्त भी ब्रज की धरोहरों को सुरक्षित करने में तथा भगवन्नाम के प्रचार-प्रसार में अप्रतीम कीर्तिमान स्थापित किया है | आपको गौ-संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए भारत सरकार द्वारा "पद्मश्री" से सम्मानित भी किया गया है | अन्य महापुरुषों द्वारा जो भी गौशालायें पोषित की जा रही हैं उनमें द्रव्य मुख्यरूप से किसी विशेष संस्था द्वारा अथवा गिने-चुने धनाढ्य व्यक्तियों द्वारा लगाया जा रहा है | इस प्रकार के द्रव्य में एक मलिनता देखने को मिलती है कि द्रव्य प्रायः अनीतिपूर्वक अर्जित किया हुआ होता है और देने वाले में अहं का भाव होता है जिससे यह गौ संरक्षण का कार्य भी राजस-तामस की श्रेणी में आ जाता है | इस मलिनता से उबरने के लिए तथा जन सामान्य को भी इस अभियान से जोड़कर उन्हें भी गौसेवा का लाभ प्राप्त कराने के उद्देश्य से श्री रमेश बाबा ने एक अनोखी योजना के शुभारम्भ की घोषणा रंगीली (लट्ठामार) होली के अवसर पर किया कि देश का प्रत्येक नागरिक गोसेवा के लिए एक रूपया प्रतिदिन अपनी आय से निकाले और अपने पास की किसी भी गौशाला को प्राप्त करा दे | वास्तव में साधकों एवं संतों के जीवन निर्वाह के लिए मधुकरी का अन्न प्रशस्त माना गया है | सन्त (ब्राह्मण) एवं गायें चूँकि एक ही कुल से सम्बन्धित हैं, जैसा कि महाभारत के अनुशासनपर्व में कहा गया है – **ब्राह्मणानां गवां चैव कुलमेकं द्विधाकृतम् |**

एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरन्यत्र तिष्ठति ||

इसलिए इसी सिद्धांत के अनुसार गायों के लिए भी बाबा ने चाहा कि समाज का गरीब से गरीब व्यक्ति भी प्रतिदिन एक रुपया गौसेवा के लिए निकालकर इस अभियान से जुड़े | इस प्रकार का द्रव्य मधुकरी की श्रेणी में आयेगा जिससे गौमाता का पोषण होगा तो यह गायों की सात्विक सेवा होगी और इसका लाभ समस्त देशवासियों एवं जन सामान्य को प्राप्त होगा |

गो-सेवा में निहित समस्त समस्याओं का निदान

लेखक- श्री आनंदशंकरजी, भूतपूर्व सलाहकार (झारखंड प्रशासन) भूतपूर्व पुलिस निदेशक, बिहार

ब्रज के परम विरक्त महान रसिक संत श्री रमेशबाबाजी महाराज और श्री-श्री राधा मानबिहारीलाल (श्री-जी और ठाकुरजी) की इच्छा से उनके अनन्य प्रेमी श्री रमेशबाबाजी महाराज द्वारा श्री रस-मंडप में कुछ दिन पूर्व संध्याकालीन सत्संग (रासोत्सव) के समय समस्त भारतवासियों से गौमाता की सेवा के लिए प्रति व्यक्ति प्रतिदिन एक रुपये दान करने का अनुरोध किया गया | श्री बाबा महाराज जैसे विरक्त महान रसिक संत का यह अनुरोध श्रीराधामानबिहारीलालजी की कृपा से ठीक समय पर किया गया है | भारत सरकार ने गोसेवा एवं पर्यावरण-संरक्षण के लिए श्रीबाबामहाराज को **'पद्मश्री'** पुरस्कार दिया है, पर वे इन लौकिक सम्मानों से अथवा मानापमान की भावनाओं से बहुत ऊपर हैं | इस सम्मान से एवं श्री बाबा महाराज के उपर्युक्त अनुरोध (एक रु.प्रति व्यक्ति प्रतिदिन गौसेवा के लिए दान करना) से भारतवासियों में विशेषकर हिन्दू समाज में जाग्रति आवे तो गौ माता की स्थिति सुधर सकती है | आगे स्वामिनी/स्वामी श्रीजी राधामानबिहारी लाल जी की स्वेच्छा | श्री बाबा महाराज सत्संग में अक्सर भगवान् श्रीकृष्ण की पूर्ण रूपेण समर्पित अद्भुत एवं विलक्षण गोसेवा का उल्लेख करते हैं | वस्तुतः श्री कृष्ण जैसा गो सेवक सुदुर्लभ है | **नीति प्रीति परमारथ स्वारथु |**

कोउ न राम सम जानि जथारथु ||

भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं में गौ माता का प्रधान स्थान रहा है | भगवान् श्रीकृष्ण की गोवत्स-लीला एवं गोचारण-लीला, गोष्ठ-पंकाभिषेक-लीला, दावाग्निपान-लीला, कालियदमन-लीला गोवर्धनधारण लीला एवं अरिष्टासुरदमन-लीला में गौमाता एवं गोवंश का प्रमुख स्थान है | श्रीकृष्ण लोकशिक्षा देते हुए मानो कह रहे हैं – नीति क्या ? गौ-सेवा | प्रीति किससे ? गौ-सेवा से | इससे तुम्हारा परमार्थ भी होगा और स्वार्थ भी सुगमतापूर्वक सिद्ध होगा | पद्मपुराण में भगवान् ने स्पष्ट कह दिया है कि यदि कोई एक जन्म में मेरी प्राप्ति करना चाहे तो सर्वोत्तम उपाय है – गोसेवा | गौमाता और समस्त गौवंश भगवान् श्रीकृष्ण के हृदय से प्रकट हुआ है और भगवान् की सारी करुणा-दया, वात्सल्य, कृपा और अनुग्रह का साकार रूप 'गौमाता' है | स्कन्दपुराण में भगवान् ने कहा है - **"कामास्तु वांछितास्तस्य गावो गोपाश्च गोपिकाः"** – मैं गायों से घिरा रहूँ, गायों का रक्षण और पालन करने वाले ग्वारियों तथा गायों की सेवा करने वाली गोपियों से घिरा रहूँ | इतनी पूज्यता गौमाता को भगवान् श्रीकृष्ण की निष्काम आराधना करने से प्राप्त हुई | माता अदिति और गौमाता सुरभि ने एक साथ घोर तप किया, पर यहाँ माता अदिति ने अपने देवपुत्रों के लिए स्वर्ग और श्री की वापसी माँगी और वहीं गौमाता सुरभि ने केवल भगवान् का प्रेम माँगा, भगवान् श्रीकृष्ण इस निष्कामता पर रीझ गए और उनके वरदान से गौमाता उनसे अधिक पूज्य बनी |

श्रीबाबामहाराज ने उपर्युक्त अनुरोध सभी भारतीय नागरिकों से किया है | इसमें सनातन धर्मावलम्बी समस्त हिन्दुओं को एक हो जाने का सन्देश छिपा हुआ प्रतीत होता है जिन्हें शासक वर्ग (चाहे अंग्रेज या स्वतंत्र भारत के शासक) आपस में लड़ाकर एवं आपस में फूट डालकर सत्ता से चिपका रहना चाहता है) अखिल भारतीय ब्राह्मण समाज, क्षत्रिय समाज, जाट समाज, गुर्जर समाज, पटेल समाज, महर्षि समाज, वैश्य समाज, दलित समाज आदि का गठन समाज को बाँटने की कुत्सित नीति पर आधारित प्रतीत होता है, जिसका लक्ष्य मुख्यतः शासकों का सत्तासीन होना प्रतीत होता है; इन सभाओं को भंगकर केवल एक हिन्दू महासभा होनी चाहिए | श्रीबाबामहाराज ने सीधे आम जनता से यह अनुरोध गोमाता एवं गौवंश के संरक्षण, अनुरक्षण एवं संवर्द्धन में हुई सरकारी विफलता के कारण किया है, ऐसा प्रतीत होता है | गायों के प्रति शासक वर्ग की क्रूरता एवं उदासीनता का इतिहास लम्बा है, पर उल्लेखनीय है कि वर्ष २००४-१४ अवधि में गुलाबी क्रान्ति (चौपायें पशुओं गाय, भैस आदि के मांस/चमड़े आदि) की रही जिसमें हजारों करोड़ रुपये इनके निर्यात से प्राप्त किये गए | अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण हैं कि २०१४-१७ में भी इस प्रवृति में कमी नहीं बल्कि बढ़ोत्तरी ही हुई | केरल, गोवा, कर्नाटक, अरुणांचल प्रदेश, मिजोरम, मेघालय, नागालैंड और त्रिपुरा में तो गौवध पर कोई प्रतिबंधन नहीं है | देश स्वतंत्र होने के बाद भी महात्मा गांधी के गौहत्या प्रतिबन्ध से सम्बंधित वादे झूठे साबित हुए | संविधान सभा ने गौ हत्या विरोध संरक्षण अनुसन्धान और संवर्द्धन का विषय मौलिक अधिकार में रखकर राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में रखा और इसे केंद्र सरकार की विधायन सूची में नहीं रखकर राज्य सूची में रख दिया जिसके फलस्वरूप गौहत्या निषेध कानूनों में एक रूपता नहीं रही और यह विषय राज्य सरकारों के अधिकार के अधिकार क्षेत्र में चला गया |

अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश के सर्वोच्च पदों पर आसीन संवैधानिक परधारक भी आर्थिक रूप से अनुपयोगी पशुओं (जिनमें गाय बैल भी हैं) की हत्या का समर्थन करते हैं | इस तर्क से यह संकेत मिलता है कि मनुष्य के माता-पिता जब बूढ़े हो जायें तो उनकी भी ऐसी गति करनी चाहिए या फिर उन्हें बेसाहारे छोड़ देना चाहिए | केंद्र सरकार द्वारा मई २०१७ में पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के अंतर्गत पशु बाजारो में पशु वध के लिए की जाने वाली खरीद-विक्री पर रोक जगाई पर सर्वोच्च न्यायालय ने इस आदेश पर रोक जगा दी | कुल मिलाकर गौमाता के संरक्षण और संवर्द्धन का चित्र अभी भी भयावह ही दीखता है | इस परिपेक्ष में प्रत्येक भारतीय को श्री बाबा महाराज के अनुरोध का पूरा पालन करना चाहिए |

कुछ सुझाव –

देश के सभी व्यासाचार्य एवं साधु संत प्रत्येक सत्संग/कथावाचन में गौमाता के संरक्षण, अनुरक्षण और संवर्द्धन की बात आम जनता में रखे और इसके लिए जनमत तैयार करने की कृपा की जाय | गौ के निमित्त आई राशि के दुरुपयोग परिणाम की शास्त्र सम्मत जानकारी भी दी जाय | श्रीबाबामहाराज की अपील (अनुरोध) (प्रति व्यक्ति एक रु.प्रतिदिन गौ सेवा के लिए) पर दृढ़तापूर्वक अनुपालन करने का अनुरोध करें |

पंचगव्य पर शोध के विषय से सम्बन्धित समितियाँ भारत सरकार ने बनाई हैं तथा लोक सभा में प्रश्नोत्तर हुए हैं पर अभी तक परिणाम की कोई अधिकृत अधिसूचना भारत सरकार द्वारा पंचगव्य की उपयोगिता के सम्बन्ध में नहीं हुई है | भारत सरकार को इस विषय पर एवं आयुर्वेद पर गहन अध्ययन तथा शोध के लिए एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय का गठन कर उसको पर्याप्त कोष देकर कार्यगर व्यवस्था करनी चाहिए |

२०१९ के लोक सभा चुनाव के बाद क्या होगा, यह तो श्री भगवान् ही जानते हैं पर यदि वर्तमान रूप पुनः सत्ता में आता है तब सरकार को गौ-संरक्षण, अनुरक्षण एवं संवर्द्धन का विषय केन्द्रीय सूची में लाने हेतु संविधान संसोधन करना चाहिए और देश की कृषि व्यवस्था को गोवंश आधारित बनाने का प्रयास यथा संभव करना चाहिए |

देश के सभी प्रमुख धर्माचार्य/व्यासाचार्य/साधु-संतों की धर्म संसद हो जिसमें हिन्दू समाज के एकीकरण, आपसी सौहार्द एवं सद्भावना कराने के लिए ठोस बिन्दुओं का निर्धारण हो और एक सर्व सम्मत सयुक्त निवेदन समस्त सनातन धर्मावलम्बी जनता से किया जाये ताकि हिन्दू समाज में एकता सौहार्द और सद्भावना बढे | ऐसा यदि हुआ तो गौरक्षा एवं श्री यमुना जी का ब्रज आगमन आदि सभी समस्याएं सरकार को सुलझानी ही पड़ेंगी | इस बैठक में सूफी संत आना चाहें तो उनके सुझाव भी लिए जा सकते हैं | **"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः"** इस वाक्य की गौमाता के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती |

हमारी प्रथम और अन्तिम आशा केवल श्री श्री राधे कृष्ण जी से ही है अतः प्रत्येक सनातन धर्मावलम्बी उनसे दैनिक प्रार्थना करे उनका नाम-संकीर्तन करे, गौ-सेवा करे ताकि विश्व का कल्याण हो |

.....

श्रीसीताजी की गौ-निष्ठा

वाल्मीकि रामायण में एक प्रसंग आता है कि जब सीता जी वनवास के समय यमुना जी को पार कर रही थीं, यमुना जी को पार करते समय सीता जी ने यमुना जी की वन्दना की और उनसे प्रार्थना की कि हे यमुने –

कालिन्दीमध्यमायाता सीता त्वेनामवन्दत ।
स्वस्ति देवि तरामि त्वां पारयेन्मे पतिर्व्रतम् ॥
यक्ष्ये त्वां गोसहस्त्रेण सुराघटशतेन च ।
स्वस्ति प्रत्यागते रामे पुरीमिक्ष्वाकुपालिताम ॥
(वा.रा.अयो. ५५.१९,२०)

"हे देवी ! मैं आपके ऊपर से होकर पार जा रही हूँ, आप ऐसी कृपा करें जिससे हम सकुशल पार हो जाएँ और आप हमारे पातिव्रत धर्म की रक्षा करना (क्योंकि मैं जानती हूँ कि मेरा हरण होगा और रामजी का रावण से युद्ध होगा |) अतः लंका विजय के पश्चात् श्रीराम जी के इक्ष्वाकु से पालित अयोध्यापुरी में सकुशल लौट आने पर मैं आपके किनारे हजारों गायों का दान करूँगी और देवदुर्लभ पदार्थों से आपकी पूजा करूँगी |

'गो-सेवा' ही गोविन्द-सेवा

लेखक- नरेश भाई सुमनलाल देसाई

रिटार्ड चीफ मैनेजर बैंक ऑफ बड़ोदा, बलसाड, गुजरात, बी कॉम, गोल्ड-मेडलिस्ट

श्रीमानमन्दिर बरसाना के हमारे परम पूज्य प्रातः स्मरणीय श्रीरमेशबाबाजी महाराज लगभग ६५ वर्षों से ब्रजधाम की सेवा में संलग्न रहते हुए मानिनी के मानभवन (मानगढ़) को अपनी नित्य आराधनाभूमि बनाया है | भक्ति धारा तो सदैव नीचे से ऊपर उठती है, आपने अपनी कथनी-करनी से परमार्थ-पथिकजनों में भक्तिरस-धारा प्रवाहित कर दी है, इस तरह से भक्ति की ये धारा-राधा बनकर बाबा के अस्तित्त्व पर बह रही है | श्रीजी की कृपा के साक्षात् स्वरूप में आज हमारे बाबा महाराज नित्य रसमयी आराधना करते हैं जहां नित्य शाम ३०० से भी ज्यादा आराधिकाएं नृत्य करती हैं, या यूं कहें भगवान् श्री राधाकृष्ण को रिझाती हैं | भक्ति के अलावा समाज जन कल्याण के अनेक कार्य आज उनकी ८५ (८३) से ज्यादा सालकी युवानी हृदय में रखकर दौड़ रही है | इस वैरागी बाबाजी की झोली में धार्मिकता – भरोसा और दया के सिवा और कुछ नहीं है – फिर भी ५-६ गायों की आरम्भिक अवस्था से लेकर आज ५५,००० से भी ज्यादा गायों की मातृवत सेवा कर रहे हैं | न ही कभी खर्च की चिंता की है, न कभी किसी से सामने मदद के लिए हाथ फैलाया है | फिर भी इतनी विशाल संख्या की गायों को कभी कोई कमी महसूस नहीं होने दी है | बाबा की आराधना से ही गायों का पालन होता है | भक्त नरसी की हुंडी साँवरिया सेठ ने चार-पाँच बार स्वीकारी थी, लेकिन हमारे बाबा की हुंडी सेठ श्रीराधामाधव हर दिन स्वीकार करते हैं | गंगा का विवेक, यमुना का कर्म और सरस्वती का सद्भाव त्रिवेणी बनकर कुंभ की तरह यही मानमंदिर में सदैव प्रवाहित है | भगवान् श्रीकृष्ण की प्रतिज्ञा और परीक्षामें से बाबाजी हमेशा उत्तीर्ण होकर चले है | राधा के रास में मीरा के मोहन को कभी नहीं भूलते हैं | बाबा की साधुता 'वेश और वृत्ति' दोनों में है | बाबा मानते हैं – जो परमात्मा को राजी करता है – वही भक्ति व महानता है | हमारे बाबा तो तपस्वी हैं, बैरागी हैं, सर्जक हैं, दर्शक हैं और चिंतक भी हैं | उनके रास की संध्या पूरी होते ही तत्क्षण दूसरे दिन की संध्या की प्रतीक्षा शुरू हो जाती है | बाबा के पास ethics - मूल्य है esthetsc- कलादृष्टि है और Experience अनुभूति भी है | लेकिन बहुत कम बोलते हैं क्योंकि जानते हैं –

Silence is Loudest Word.

ब्रजभूमि केवल भूमि नहीं है, ये तो भक्ति (प्रेम) की पाठशाला है ... पूरे ब्रज में गोपालन छाया हुआ है क्योंकि स्वयं गोपाल गायों की आत्मा बनकर अंदर बैठा है और वैसे भी ब्रज में वेणु (श्रीकृष्ण की वंशी), धेनु (गाय) और रेणु (ब्रजरज) की महिमा अपार है | गाय हमारी आत्मा है | गाय सर्वधर्ममयी, ओषधमयी-सर्वविद्यामयी, हमारी अस्मिता, हमारी सुरक्षा, हमारी उन्नति, हमारी उपासना, हमारी उड़ान, हमारा धारक तत्व और अँधेरे का हमारे लिए उजाला है |

समता और ममता ये सुरधेनुके दो नेत्र हैं, उसके चारु आँचल में से केवल दूध की धारा ही नहीं, बल्कि विवेक की धारा, शरणागति की धारा, उपासना की धारा और कर्म की धारा बहती है | गाय उरप्रेरक रघुवंश और यदुवंश विभूषण है | हमारे घर में एक गाय रखना "यज्ञ " बन जाता है | गाय को धेनु कहते हैं, धेनु का अर्थ "धैर्य" है जो गाय देती है और 'नु' का अर्थ है कभी "नुक्सान" नहीं होगा | गाय राष्ट्र का श्रृंगार भी है और सुरक्षा भी है .. अपनी माता जन्म देती है – गाय माता 'जीवन' देती है .. शीलवंत गाय का मुखदर्शन पाप मिटाता है | गाय का पुच्छ-दर्शन प्रतिष्ठा दिलाती है | उनके दोनों सींग उन्नत बनाते है | ऐसी गायों के लिए हृदय में पूरी करुणा लेकर जीने वाले हमारे बाबा जी केवल मानमन्दिर की "माताजी गौशाला" ही नहीं, ब्रज और ब्रज के बाहर की गौशालाओं की कोई बात मालूम पड़ती है तो बाबा सब तरह से मदद पहुँचाते हैं |

गाय का एक अर्थ है – गो-इन्द्रियाँ, जिस तरह हम अपने शरीर की इन्द्रियों का ख्याल रखते है – उसी प्रकार गाय का भी पूरा ख्याल रखना चाहिए | उस पर बताया कि गाय हमारे लिए क्या है ? ये शीलवंत गाय क्षण में जीने की शिक्षा देती है | मात्र निरीक्षण का परिक्षण नहीं, गाय का प्रेमारक्षण भी करना चाहिए, हम उनके वंश के है | इसलिए हमारे वंश की रक्षा और रखवारी करना हमारा धर्म है | प्रसाद पाते समय एक भूखी गाय को याद करके भोजन खाओगे तो आँखें नम हो जाएँगीं और अगर एक रोटी गाय को खिला दी तो आँखें कृतज्ञता से छलक उठेंगी | पहले के ज़माने में रसोईघर में प्रथम रोटी गौ-ग्रास के रूप में भी होती थी, परिवर्तनशील जिस कलिकाल में अच्छी चीजें नष्टभूत हो गई हैं | प.पू.बाबा महाराज ने इसलिए छलकती आँखों से करुणा सभर आँखों से अपील की है कि कुछ न करो तो मात्र एक रुपया जो एक रोटी की कीमत से कम है गाय के लिए निकालो और गौ-ग्रास की बहती गंगा में अपनी भी एक छोटी-सी अंजली अर्पण करो तो आपका इष्ट बहुत खुश हो जाएगा | गौ-मैया की छलकती आँखें आपकी झोली वैभव से भर देंगी | अपनी माँ हमारी रक्षा बालक समझ कर दो पैर से दौड़कर करती है, परन्तु गाय माता हमारी रक्षा के लिए चार पैर से दौड़ती है | गाय में 'गा' – गंगा का स्वरूप है, 'य' – यमुनाजी का | आपके द्वारा गौमाता के लिए की गयी मात्र एक रुपये की सेवा साक्षात् गोविंद की सेवा बन जायेगी |

गौ-धन से समृद्धशाली भारत

अंतर्राष्ट्रीय कथा व्यासाचार्या श्रीमुरलिकाजी, मानमंदिर, गह्वरवन, बरसाना

"**गावो विश्वस्य मातरः**" गाय किसी व्यक्ति विशेष की नहीं सम्पूर्ण विश्व की माँ है अतः सम्पूर्ण राष्ट्र का परमधर्म है – गौ वध निवारण व गौ सेवा। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र के २/२६ में गौरक्षा पर राजा को पूर्ण रूपेण ध्यान देने का निर्देश किया है। अशोक के शिला लेखों में गौहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध द्रष्टव्य है। बदाउनी ने लिखा है कि हिन्दुओं तथा जैनियों के प्रभाव से अकबर के राज्य में कोई भी गौ-वध नहीं कर सकता था। बी.ए. स्मिथ ने अपने इतिहास प्र.-१०१ पर जहाँगीर के विषय में यहाँ तक लिखा है कि वह जान या अनजान में भी गौहत्यारों को फांसी पर लटकाने में नहीं हिचकता था। महात्मा गाँधी, स्वामी करपात्री जी, प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी, हनुमान प्रसाद पोद्दार जी (भाई जी) ने भी प्रयास किया भारत में पूर्णतः गौवध बन्द कराने का किन्तु यह देश का दुर्भाग्य है जो अंधे शासक अपने लाभ को न देख पाने के कारण विनाश की ओर बढ़ रहे हैं, गौरक्षक के नाम पर गौभक्षक बन रहे हैं। ऐसी स्थति में पवित्राचार, श्री, ऐश्वर्य एवं शांति स्थापन देश में कदापि सम्भव नहीं है। जब तक भारत में गाय का आदर था, दूध-दही की नदियाँ बहती थीं, देश में शांति थी, देवता भी यहाँ जन्म लेने को लालायित रहते थे। स्वर्ग की सर्वश्रेष्ठ अप्सरा उर्वशी तो केवल घृतपान करने के लिए पुरुरवा के साथ भारत में बहुत दिनों तक रही। राजा मरुत के यज्ञ में देवगण स्वयं परिवेषण कार्य करते थे, विश्वेदेव सदा सभासद बनकर रहते। गौ-सेवक गोविन्द का सर्वाधिक प्रिय बन जाता है यह तो निश्चित है ही।

१०वीं शताब्दी तक भारत वर्ष गौवंश के लिए स्वर्ग की भाँति था। महमूद गजनवी के आक्रमण से (९९ से १०३० ई.) पूर्व मुसलमान सूफी संत भारत में आकर साधन करने लगे थे। गाय को बड़ा आदर देते थे। बाबर (१५२६ से १५३०) की दूरदर्शिता ने बहुसंख्यक समाज की इस बद्धमूल भावना को परखा। इस्लाम भी इस धर्म के विरुद्ध नहीं अतः भारत में गौहत्या बन्द कराई।

अकबर (१५४२-१६०५) ने भी गौवध बन्द करा दिया। १८वी शताब्दी से कानून कुछ बदलने लग गए। १९वी शताब्दी में माँस भक्षण को स्थायित्व दे दिया विज्ञान ने। इसके लिए गौवध उत्तरोत्तर बढ़ने ही लगा। १९०५ में गौरक्षा का प्रश्न उठा तो यही कहा गया कि अंग्रेज मांसभक्षी हैं, इन्हें जल्द से जल्द देश से निष्कासित किया जाए। उस समय गाँधी जी ने यहाँ तक कहा – हम स्वतंत्रता के लिए कुछ समय प्रतीक्षा भी कर सकते हैं किन्तु गौहत्या होना हमें एक दिन भी सहन नहीं होगा। आज भारत स्वतन्त्र हो गया किन्तु गौवध बन्द न हुआ। जब भारतीय ही गौवध करेंगे तो इस पर रोकथाम लगाने के लिए इटैलियन या अमरीकी नहीं आयेंगे। भारत सोने की चिड़िया था एवं पुनः पूर्ववत हो सकता है क्योंकि भारत जैसी सोना उगलने वाली भूमि अन्यत्र नहीं है।

'गाय' अद्वितीय-अलौकिक सतत् परोपकारिणी वात्सल्यमयी माँ है, जो आजीवन परहित कर परमार्थ का पोषण करती है | यहाँ तक कि गौमाता का गोबर मल नहीं वरन श्रेष्ठ है निर्दूषज है रोग नाशक है किसी को खुजली हुई हो गोबर में गोमूत्र मिलाकर लेप कर धूप में बैठ जाओ, सभी खुजली रोग के बैक्टीरिया नष्ट हो जायेंगे | अनुपान के साथ सेवन किया जाए तो विश्व के सभी रोगों पर गौबर-गौमूत्र से उपचार हो सकता है। गोबर से बनी खाद से पृथ्वी की उर्वरा शक्ति इतनी बढ़ जाती है कि प्राचीन भारत को सोने की चिड़िया इसीलिए (गौधन के कारण) कहा जाता था। भारत सोने की चिड़िया था एवं पुनः पूर्ववत् हो सकता है क्योंकि भारत जैसी सोना उगलने वाली अवनि (भूमि) अन्यत्र नहीं हैं।

ब्रिटिश साम्राज्य की कूटनीति

अंग्रेज जिन्होंने भारत पर साम्राज्य किया था उनकी आश्चर्यजनक दो बातें ये हैं –

१. भारतीय गुरुकुल व्यवस्था २. भारतीय कृषि व्यवस्था।

ब्रिटिश राज्यपाल 'रॉबर्ट क्लाइव' ने भारत की कृषि व्यवस्था पर विस्तृत खोज की थी, इस खोज एवं ब्रिटिश नीतियों से जो परिणाम हुए वो नीचे दिए हैं –

१. भारत की कृषि में गाय की प्रथम प्रधानता है और गाय की मदद के बिना भारतीय कृषि का सम्पादन नहीं होता है।
२. भारतीय कृषि का मूल आधार है गाय, उसका विलोपन करना आवश्यक है।

३. भारत में सबसे पहला कसाई खाना १७६० में आरम्भ हुआ था, जहाँ पर ३०,००० गायों को मारा जाता और लगभग एक करोड़ गाय १ वर्ष के अन्दर नष्ट हुई।
४. उसने यह अंदाज लगाया था कि बंगाल में गाय की संख्या इंसान की संख्या से अधिक है और इसी तरह की स्थिति भारत के अन्य भागों में थी।
५. भारत देश में अस्थिरता लाने के विचार से कसाई खाने का आरम्भ करने की बहुत बड़ी साजिश की गयी थी।
६. एक बार जब गाय को नष्ट किया जायेगा तब वहाँ पर गोबर से बनी खाद नहीं रहेगी और किसी तरह के रोग विनाश के लिए गौमूत्र भी नहीं रहेगा। देश को छोड़ने से पहले रॉबर्ट क्लाइव ने भारत में अनगिनत कसाई खाने खुलवा दिये थे।

कसाई खाने के बिना भारतीय कृषि की स्थिति की अद्भुत कल्पना को समझना -

१. १७४० में तमिलनाडू के आकोट जिले में ५४ कुंतल चावल की उपज एक एकड़ भूमि में हुई जहाँ पर साधारण खाद और रसायन जैसे गाय का मूत्र और गोबर का उपयोग ही किया था।
२. १९९० तक परिणाम में ३५० कसाई खाने दिन रात इस कार्य में थे, भारत में गाय लगभग नष्ट हो गयी थी और भारत को इंग्लैंड के दरवाजे खटखटाने पड़े।
३. आजादी मिलने के बाद हरित क्रांति (खाने के लिए आत्मनिर्भरता के नाम पर) भारत में रासायनिक खाद का अत्यधिक उपयोग हुआ।
४. अंग्रेजों के भारत छोड़ने से पहले एक दैनिक समाचार पत्र के संपादक ने महात्मा गाँधी का साक्षात्कार किया। एक प्रश्न के उत्तर में महात्मा गाँधी ने कहा था कि जिस दिन भारत को स्वतंत्रता प्राप्त होगी उसी दिन से सभी कसाई खाने बन्द करवा दिए जाएँगे।
५. १९२९ में एक जन सभा में नेहरू जी ने कहा था कि अगर वह भारत के प्रधान मंत्री बन जाते हैं तो सबसे पहला कार्य कसाई खाने बन्द करवाना होगा।
६. लेकिन १९४७ की घटना के बाद से कसाई खाने ३५० से बढ़कर ३६,००० हो गए।
७. आज कसाई खाने का व्यापार आन्ध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के अल-कबीर और देवनार में एक समय में १०,००० मात्रा में गाय काटी जाती हैं। अब तो ये क़त्लखाने बढ़कर न जाने कितने हो गए हैं वर्तमान के आंकड़े नहीं लिखे गये किन्तु ये दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं यह तो निश्चित है ही।

इस अवसर पर भारत को जाग्रत करने के लिए ये सांकेतिक चेतावनी है। यहाँ किसी की आलोचना का दृष्टिकोण लेखक का नहीं है। भारतवर्ष में गौ-भक्त व भगवद्भक्त हैं ही नहीं, ऐसा नहीं है। भारतीय सनातन संस्कृति में महापुरुष सदा रहे हैं तभी धर्म की ध्वजा आज तक फहरा रही है। पृथ्वी धरातल पर स्थित है फिर भी समग्र राष्ट्र को गौ भक्ति व भगवद् भक्ति में संलग्न न देखकर हृदय दुःख से द्रवित होता है। पूज्य श्री बाबा महाराज ने वर्तमान में गौवंश की स्थिति को देखकर ही 'गौसेवा-सदस्यता' अभियान चलाया है | गौसेवा के प्रभाव से भारतवर्ष में आज भी इतनी शक्ति है कि अकेला भारत समग्र विश्व को शुद्ध अन्न दे सकता है। उसकी निम्न सारणी है –

देश	कुलभूमि (हेक्टेयर में)		उपजाऊ भूमि (हेक्टेयर में) (% में भी)	बेकार भूमि (हेक्टेयर में) (% में भी)
रूस	१ अरब ७० करोड़ ८० लाख		१२ करोड़ ६० लाख (७.३८%)	१ अरब ५८ करोड़ २० लाख (९२.६२%)
अमेरिका	९३ करोड़ ६० लाख		१ करोड़ ७० लाख (१.८२%)	९१ करोड़ ९० लाख (९८.१८%)
ब्राज़ील	८५ करोड़ १० लाख		५ करोड़ ३० लाख (६.२३%)	७९ करोड़ ८० लाख (९३.७७%)
चीन	९६ करोड़		१२ करोड़ ४ लाख (१२.९२%)	८३ करोड़ ६ लाख (८७.०८%)
भारत	३२ करोड़ ८० लाख		१९ करोड़ (५७.९३%)	१३ करोड़ ८० लाख (४२.०७)

विश्व की जनसंख्या ६०० करोड़ है।
१ वर्ष के लिए सारे विश्व को अनाज = ६०० करोड़ कुन्तल।
भारत में, १ हेक्टेयर भूमि में ६० कुन्तल अनाज पैदा होता है।
भारत की १९ करोड़ हेक्टेयर भूमि में ११४० करोड़ कुन्तल अनाज पैदा हो सकता है। सारे विश्व को ६०० करोड़ कुन्तल अनाज खिला देने के बाद भी भारत के पास ५४० करोड़ कुन्तल शेष बच जाता है, अर्थात् गौवंश के कारण ही यहाँ की सर्वाधिक उपजाऊ भूमि है|